GET HOROSCOPE
IN PDF

SPECIALIZED IN YOUR
LOCAL LANGUAGE

www.astropdf.com

support@astropdf.com

(+91) 8143 - 816797

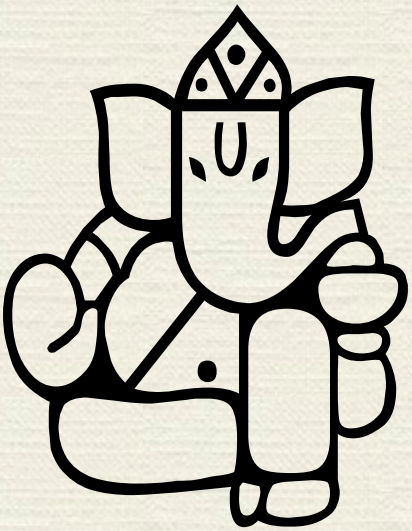

Horoscope of **Pawan Kalyan**

Prepared using **Astro-Vision AstroSuite Online**

Licensee : ASTRO PDF

जननी जन्म सौख्यानाँ
वर्धनी कुल सँपदाँ
पदवी पूर्व पुण्यानाँ
लिख्यते जन्म पंत्रिका

माता और संतान की भलाई के लिए
परिवार की संतोष वृद्धि के लिए
प्राचीन धार्मिक अनुष्ठानों के आयोजन हेतु
इस कुंडली का निर्माण किया गया

# पंचाग फलादेश

नाम : Pawan Kalyan (पुरुष)

## सप्ताह के दिन में। : गुरुवार

गुरुवार में जन्म लेने से आप दयालु और सहृदय होंगे। आपको एक सुखी पारिवारिक जीवन मिलेगा। आप व्यवहारिक बुद्धि, तत्वज्ञान, और धार्मिकता के समन्वय से जीवन जी लेते हैं।

## जन्म नक्षत्र : उत्तराषाढा

आपका जन्म उत्तराषाढा नक्षत्र में हुआ है। लड़कपन में आप इस दुनिया की वस्तुस्थितियों पर ध्यान देनेवाले और जाननेवाले होंगे। आप अपने परिवार की प्रतिष्ठा और नाम रखनेवाले है। भाग्य और दुर्भाग्य दोनों का आपको अनुभव होगा। सामान्य रूप में प्रगति प्राप्त होगी। आदरणीय लोगों से उपदेश लेकर सावधानी से आप निर्णय लेंगे। आप कोई कृत्रिम दिखावटी काम पर विश्वास न करेंगे। सभी कार्य नियमानुसार चलाएँगे। दूसरों पर दया करके कभी- कभी पछताना पड़ेगा। दूसरों को अप्रसन्न करनेवाली बातें आप न कहेंगे। पत्नी या बच्चों के अस्वास्थ्य के कारण जीवन-सुखमें कमी होगी। आप बातूनी है। मानसिक संतुलन बनाये रखने का प्रयत्न होना चाहिए। आप उपकार को न भूलनेवाले व्यक्ति हैं। धर्मनिष्ठता और शूरवीरता की आपमें कमी नहीं है। विनम्रता आपका आभूषण है। मनभावन पत्नी का उत्तम सुख प्राप्त रहेगा। आज्ञाकारी व यशस्वी पुत्र होंगे। सुरुचिपूर्ण वस्त्राभूषणों से अलंकृत रहेंगे। दूसरों का दु:ख हृदय को पवित्र कर देगा। प्रभुत्व और संपन्नता को पाकर भी करुणा आप में भरपूर रहेगी। दयालुता के कारण जाने जायेंगे। आप स्वाभिमानी, सर्वप्रिय, अल्पभाषी, स्वस्थ पुष्ट शरीरवाले और बहुमित्रों वाले होंगे। चित्रकला में अभिरुचि हो सकती है। व्यवसाय से अतुलित संपदा के स्वामी होंगे। समाज में कोई खास और बड़ा काम करना संभव होगा। आयु के 36वें से 42वें वर्ष के मध्य स्थिरता प्राप्त होगी। 'उत्तराषाढा संजात: शूरच विजयी रणे॥'

## तिथि : व्दादशी

आपका जन्म द्वादशी तिथि में हुआ है। प्रभु कृपा से आप अनेक गुणों से संपन्न हैं। जो लोग आप को पहचानते हैं वे आप को आत्मार्थता से प्यार करेंगे, आपके धन के लिए नहीं। आपकी कमाई बड़े पैमाने में ज्ञान और मानवता के प्यार के उपयोग में आयेगी। व्यवहार कुशलता, अन्नदाता, जल प्रियता और राजकृपा प्राप्त करना आपके अन्य गुण होंगे।

## करण : बालव

बालव करण में जन्म लेने के कारण आप एक स्वतंत्र चिन्तक होंगे। अपने आपके ऊपर नियंत्रण करने से आप स्वयं को रोकते हैं। रिश्तेदारों को आप ज्यादा महत्व नहीं देते।

## नित्य योग : सौभाग्य

आपका जन्म सौभाग्य नित्ययोग में हुआ है। जिसके उत्तम लक्षण आपके हाथ और पैर में अंकित हैं। इस योग से आप अनेक दृष्टिकोण से अनुगृहीत हैं। भोजन की चीज़ तैयार करने और वितरण करने में समरूप प्रयुक्त करने का सामर्थ्य आप में खिला हुआ है। सहकारी प्रवृत्तियों से आप को धन मिलता रहेगा। धन उपार्जन के अनेक मार्ग प्राप्त होंगे। आप अपने निवास स्थान से दूर जाकर रहेंगे। 'ज्ञानी धनी सत्यपरायण: स्यादाचारीलो बलवान् विवेकी...'

| | |
|---|---|
| नाम | : Pawan Kalyan |
| लिंग | : पुरुष |
| जन्म तिथि | : 2 सितम्बर 1971 गुरुवार |
| जन्म समय | : 12:00:00 PM Standard Time |
| समय क्षेत्र | : 05:30 ग्रीनवीच रेखा के पूर्व |
| जन्म स्थान | : Bapatla |
| रेखांश & अक्षांश | : 80.28 पूर्व, 15.54 उत्तर दिशा |
| अयनांश | : चैत्रपक्ष = 23 डिग्री. 27 मिनिट. 54 सेकेन्ड. |
| जन्म नक्षत्र - पद | : उत्तराषाढा - 3 |
| जन्म राशी - राशी स्वामी | : मकर - शनी |
| लग्न - लग्न स्वामी | : वृश्चिक - मंगल |
| तिथि | : व्दादशी, शुक्लपक्ष |

| | |
|---|---|
| सूर्योदय | : 05:56 AM |
| सूर्योस्त | : 06:21 PM |
| दिनमान | : 12.25 |
| दिनमान (Nazh.Vina) | : 31.2 |
| स्थानीय समय | : Standard Time - 8 Min. |
| ज्योतिष शास्त्र के अनुसार जन्म तिथि | : गुरुवार |
| कलिदिन | : 1852731 |
| दशा पद्धति | : विंषोत्तरी, साल = 365.25 दिन |

| | |
|---|---|
| नक्षत्र स्वामी | : सूर्य |
| गण, योनी, पशु | : मनुष्य, पुरुष, बैल |
| पक्षी, वृक्ष | : मुर्गा, कटहल |
| चन्द्र अवस्था | : 9 / 12 |
| चन्द्र वेला | : 26 / 36 |
| चन्द्र क्रिया | : 43 / 60 |
| दग्द्ध राशी | : तुला, मकर |
| करण | : बालव |
| नित्य योग | : सौभाग्य |
| सूर्य की राशी - नक्षत्र का स्थान | : सिंह - पूर्वा |
| अंगादित्य का स्थिति | : पेट |
| Zodiac sign (Western System) | : Virgo |

| | |
|---|---|
| योग बिंदु - योगी नक्षत्र | : 145:13:7 - पूर्वा |
| योगी ग्रह | : शुक्र |
| दुय्यम योगी | : सूर्य |
| अवयोगी नक्षत्र - ग्रह | : विशाखा - गुरु |
| आत्मकारक (आत्मा) - कारकांश | : मंगल - मिथुन |
| अमात्यकारक (मन / ज्ञानशक्ति) | : शुक्र |
| अरुद्ध लग्न (पद लग्न) | : मीन |
| धन अरुद्ध | : तुला |

## ग्रहों का सायन रेखांश

ग्रहों का रेखांश पश्चमी पद्धती के अनुसार दिया गया है। जिसमें युरेनस, नेपच्युन और प्लूटो को भी शामील किया गया है।

पाश्चात्य पद्धति के अनुसार राशिचक्र में आप की राशी - कन्या

| ग्रह | रेखांश* |
|---|---|
| लग्न | 244:24:46 |
| चंद्र | 299:40:11 |
| सूर्य | 159:8:43 |
| बुध | 147:58:55 वक्री |
| शुक्र | 160:38:40 |
| मंगल | 312:14:32 वक्री |
| गुरू | 238:51:52 |
| शनी | 66:16:17 |
| यूरेनस | 191:47:50 |
| नेप्टयून | 240:25:9 |
| प्लूटो | 178:46:19 |
| अयन | 313:1:33 |

ग्रहों के निरयन रेखांश भारतीय ज्योतिष शास्त्र के आधार पर किया गया है। सभी गणनाएं, कोष्टक, विवेचन विश्लेषण समय संस्कार आदि भारतीय फलित ज्योतिष के 'सायन मूल्यों' के आधार पर की गई है।

## ग्रहों का निरायन रेखांश

भारतीय फलित ज्यातिष में सभी गणनाएँ और संस्कार सायन पद्धति के अनुसार किये जाते हैं। सायन रेखांश से निरायण रेखांश को घटा कर निरायण मूल्य ज्ञात किया जाता है।

अयनांश की गणना अलग अलग पद्धती से की जाती है। उनके प्रकार और आधार नीचे बताये गये हैं:

चैत्रपक्ष = 23 डिग्री. 27 मिनिट. 54 सेकेन्ड.

| ग्रह | रेखांश* | राशी | राशी के रेखांश* | नक्षत्र | पद |
|---|---|---|---|---|---|
| लग्न | 220:56:52 | वृश्चिक | 10:56:52 | अनुराधा | 3 |
| चंद्र | 276:12:17 | मकर | 6:12:17 | उत्तराषाढा | 3 |
| सूर्य | 135:40:49 | सिंह | 15:40:49 | पूर्वा | 1 |
| बुध | 124:31:1 | सिंह | 4:31:1 वक्री | मघा | 2 |
| शुक्र | 137:10:46 | सिंह | 17:10:46 | पूर्वा | 2 |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| मंगल | 288:46:38 | मकर | 18:46:38 वक्री | श्रवण | 3 |
| गुरू | 215:23:58 | वृश्चिक | 5:23:58 | अनुराधा | 1 |
| शनी | 42:48:23 | वृषभ | 12:48:23 | रोहिणी | 1 |
| राहु | 289:33:39 | मकर | 19:33:39 | श्रवण | 3 |
| केतु | 109:33:39 | कर्क | 19:33:39 | आश्लेषा | 1 |
| गुलिक | 194:31:6 | तुला | 14:31:6 | स्वाती | 3 |

## नक्षत्र का स्वामी / उप स्वामी / उप उप स्वामी कोष्टक

| ग्रह | नक्षत्र | नक्षत्र स्वामी | उप स्वामी | उप उप स्वामी |
|---|---|---|---|---|
| लग्न | अनुराधा | शनी | सूर्य | शुक्र |
| चंद्र | उत्तराषाढा | सूर्य | बुध | राहु |
| सूर्य | पूर्वा | शुक्र | सूर्य | मंगल |
| बुध | मघा | केतु | चंद्र | केतु |
| शुक्र | पूर्वा | शुक्र | चंद्र | शुक्र |
| मंगल | श्रवण | चंद्र | बुध | मंगल |
| गुरू | अनुराधा | शनी | शनी | गुरू |
| शनी | रोहिणी | चंद्र | राहु | बुध |
| राहु | श्रवण | चंद्र | बुध | शनी |
| केतु | आश्लेषा | बुध | शुक्र | शुक्र |
| गुलिक | स्वाती | राहु | केतु | शुक्र |

## निरयन सारिणी संक्षिप्त (डिग्री. मिनिट. सेकेन्ड.)

| ग्रह | राशी | रेखांश | नक्षत्र/पद |
|---|---|---|---|
| लग्न | वृश्चिक | 10:56:52 | अनुराधा / 3 |
| चंद्र | मकर | 6:12:17 | उत्तराषाढा / 3 |
| सूर्य | सिंह | 15:40:49 | पूर्वा / 1 |
| बुध | सिंह | 4:31:1R | मघा / 2 |
| शुक्र | सिंह | 17:10:46 | पूर्वा / 2 |
| मंगल | मकर | 18:46:38R | श्रवण / 3 |
| गुरू | वृश्चिक | 5:23:58 | अनुराधा / 1 |
| शनी | वृषभ | 12:48:23 | रोहिणी / 1 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| राहु | मकर | 19:33:39 | श्रवण / 3 |
| केतु | कर्क | 19:33:39 | आश्लेषा / 1 |
| गुलिक | तुला | 14:31:6 | स्वाती / 3 |

## राशी

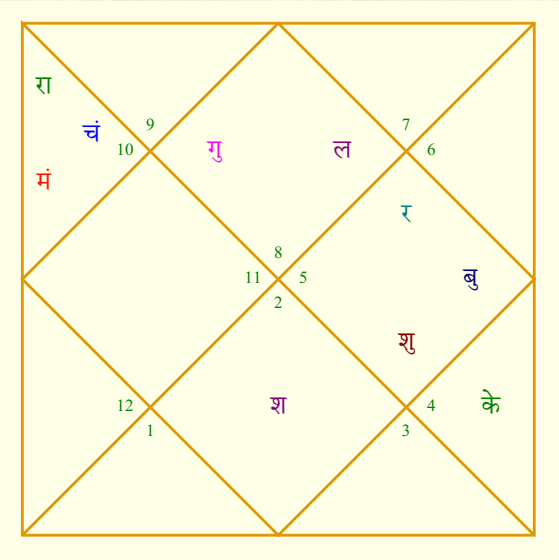


## नवांश

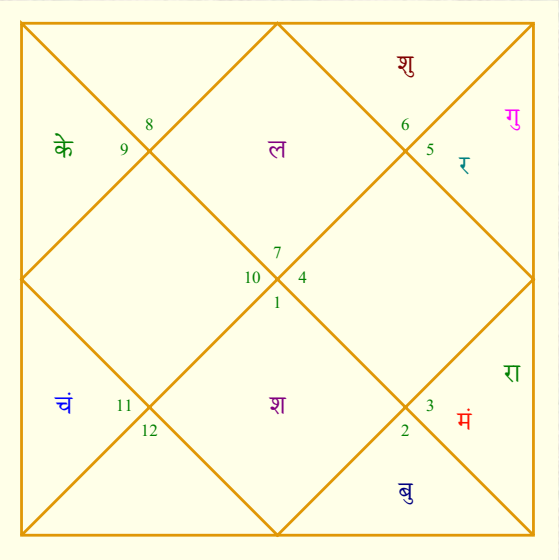


जन्म के समय दशा का भोग्य काल = सूर्य 1 साल, 8 मास, 15 दिन

## विशिष्ट राशी चक्र

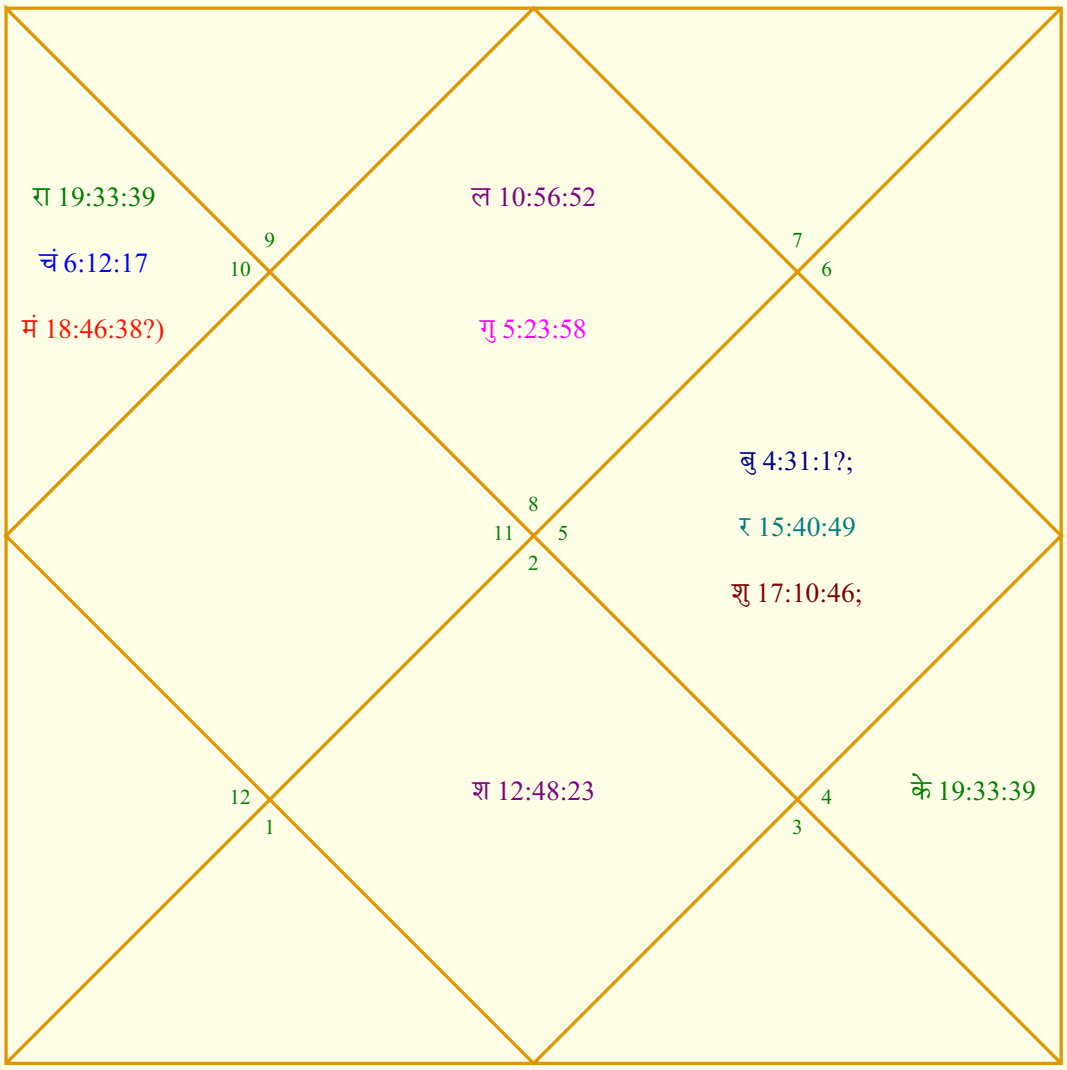


| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ? | वक्री | ) | उच्च का | ( | नीच का | ; | सयहोग |

## भाव कुंडली

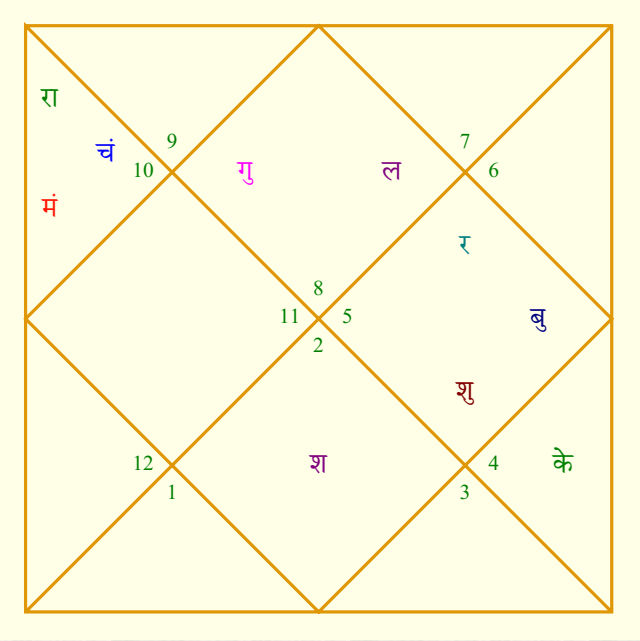


## भाव कोष्टक

| भाव | आरंभ* (प्रारंभ) | मध्य* (मध्य) | अन्त्य* (अंत) | ग्रह भाव स्थिती |
|---|---|---|---|---|
| 1 | 205:56:52 | 220:56:52 | 235:56:52 | गु |
| 2 | 235:56:52 | 250:56:52 | 265:56:52 | |
| 3 | 265:56:52 | 280:56:52 | 295:56:52 | चं, मं, रा |
| 4 | 295:56:52 | 310:56:52 | 325:56:52 | |
| 5 | 325:56:52 | 340:56:52 | 355:56:52 | |
| 6 | 355:56:52 | 10:56:52 | 25:56:52 | |
| 7 | 25:56:52 | 40:56:52 | 55:56:52 | श |
| 8 | 55:56:52 | 70:56:52 | 85:56:52 | |
| 9 | 85:56:52 | 100:56:52 | 115:56:52 | के |
| 10 | 115:56:52 | 130:56:52 | 145:56:52 | र, बु, शु |
| 11 | 145:56:52 | 160:56:52 | 175:56:52 | |
| 12 | 175:56:52 | 190:56:52 | 205:56:52 | मा |

### सुदर्शन चक्र

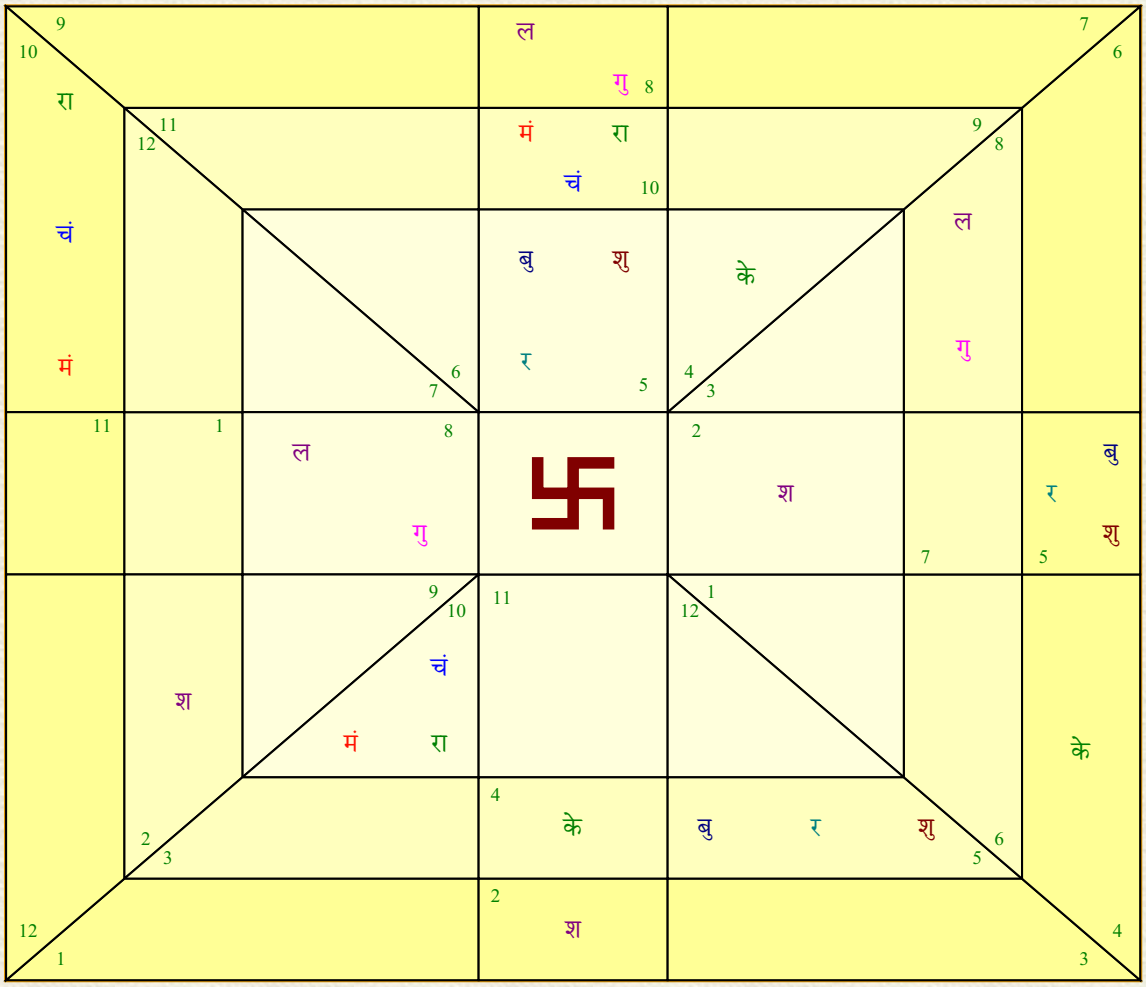


| चं= चंद्र | र= सूर्य | बु= बुध | शु= शुक्र | मं= मंगल | गु= गुरु | श= शनी | रा= राहु | के= केतु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|

## उपग्रह

हर ग्रह की स्तिथिनुसार उपग्रह की भी गणना की जाती है। सूर्य के रेखांश पर आधारित - चन्द्र, शुक्र, मंगल, राहु और केतु के उपग्रह इस प्रकार है।

### धुमादी योग के उपग्रह

| ग्रह | उपग्रह | गणना प्रणाली |
|---|---|---|
| मंगल | धूम | सूर्य का रेखांश + 133 डिग्री. 20 मिनिट. |
| राहु | व्यतिपात | 360 - धूम |
| चंद्र | परिवेश | 180 + व्यतिपात |
| शुक्र | इन्द्रचाप | 360 - परिवेश |
| केतु | उपकेतु | इन्द्रचाप + 16 डिग्री. 40 मिनिट. |

सूर्य, बुध, गुरू, शनी के उपग्रहों का तथा मंगल के अन्य उपग्रहों की काल गणना दिवस - रात्रि को समभाग में विभाजित करके की जाती है।

प्रथम भाग दिन के स्वामी को समर्पित है, तत्पश्च्यात अन्य स्वामी साप्ताहिक क्रमानुसार होते हैं। आठवे भाग का कोई स्वामी नहीं होता।जन्म रात्रि के समय हुआ हो तो, आठ समभागो में विभाजीत पहले सात भागों को ग्रहों का स्वामित्व दिया जाता है। यह सप्ताह के पाँचवे दिन से गिना जाता है।

रेखांश की गणना के लिये दो पद्धतियों का उपयाग किया गया है।प्रथम पद्धति के अनुसार, प्रारंभ समय काल (ग्रहों के स्वामी) ग्रहाधीपती के अधिन रहता है। दूसरी पद्धति के अनुसार काल के अंतिम चरण ग्रहाधीपती के आधिन रहता है।

गुलीक काल गणनानुसार शनी के उपग्रह की स्तिथि अनुसार एक तीसरी पद्धति का भी अनुसंधान किया गया है, जिससे धुमादी योग के उपग्रहों के रेखांश की गणना की जाती है। यह नीचे दिये गये उदयकाल पर निर्भर है।इस प्रकार से प्राप्त गुणफल को 'एस्ट्रो विज़न' कुंडली में 'मांडी' कहा गया है और जन्मपत्रिका मे मुख्य ग्रह और राशी चक्र के साथ दिया गया है।

| दिन | दिन के समय जन्म | रात के वक्त जन्म |
|---|---|---|
| रविवार | 26 घटि | 10 घटि |
| सोमवार | 22 | 6 |
| मंगलवार | 18 | 2 |
| बुधवार | 14 | 26 |
| गुरूवार | 10 | 22 |
| शुक्रवार | 6 | 18 |
| शनिवार | 2 | 14 |

## गुलिकादी का समूह।

स्वीकृत प्रणाली : लग्न के अंन्तिम चरणों मे।

| ग्रह | उपग्रह | काल प्रारंभ | काल के अन्त समय |
|---|---|---|---|
| सूर्य | काल | 10:35:26 | 12:8:33 |
| बुध | अर्धप्रहर | 15:14:48 | 16:47:56 |
| मंगल | मृत्यु | 13:41:41 | 15:14:48 |
| गुरू | यमघंट | 5:56:3 | 7:29:11 |
| शनी | गुलिक | 9:2:18 | 10:35:26 |

## रेखांश उपग्रह

| उपग्रह | रेखांश* | राशी | राशी के रेखांश* | नक्षत्र | पद |
|---|---|---|---|---|---|
| काल | 222:52:16 | वृश्चिक | 12:52:16 | अनुराधा | 3 |
| अर्धप्रहर | 290:2:49 | मकर | 20:2:49 | श्रवण | 4 |
| मृत्यु | 265:52:26 | धनु | 25:52:26 | पूर्वाषाढा | 4 |
| यमघंट | 157:20:37 | कन्या | 7:20:37 | उत्तरा | 4 |
| गुलिक | 201:43:2 | तुला | 21:43:2 | विशाखा | 1 |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| परिवेश | 270:59:10 | मकर | 0:59:10 | उत्तराषाढा | 2 |
| इन्द्रचाप | 89:0:49 | मिथुन | 29:0:49 | पुनर्वसु | 3 |
| व्यतिपात | 90:59:10 | कर्क | 0:59:10 | पुनर्वसु | 4 |
| उपकेतु | 105:40:49 | कर्क | 15:40:49 | पुष्य | 4 |
| धूम | 269:0:49 | धनु | 29:0:49 | उत्तराषाढा | 1 |

## उपग्रहों के नक्षत्राधीपती / नक्षत्राधी-सहपती / नक्षत्राधी-अनुसहपती के कोष्टक

| उपग्रह | नक्षत्र | नक्षत्र स्वामी | उप स्वामी | उप उप स्वामी |
|---|---|---|---|---|
| काल | अनुराधा | शनी | मंगल | चंद्र |
| अर्धप्रहर | श्रवण | चंद्र | केतु | राहु |
| मृत्यु | पूर्वाषाढा | शुक्र | बुध | शनी |
| यमघंट | उत्तरा | सूर्य | केतु | राहु |
| गुलिक | विशाखा | गुरू | गुरू | राहु |
| परिवेश | उत्तराषाढा | सूर्य | राहु | चंद्र |
| इन्द्रचाप | पुनर्वसु | गुरू | सूर्य | गुरू |
| व्यतिपात | पुनर्वसु | गुरू | मंगल | बुध |
| उपकेतु | पुष्य | शनी | गुरू | केतु |
| धूम | उत्तराषाढा | सूर्य | मंगल | शुक्र |

## उपग्रह राशी

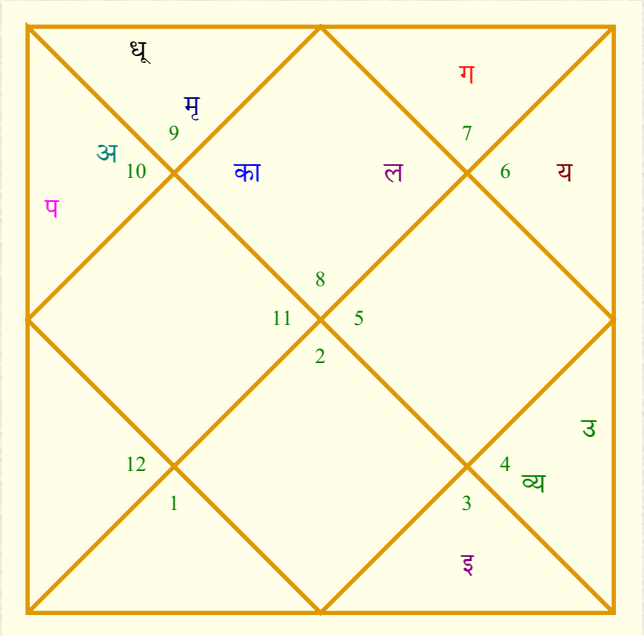

*का= काल* *अ= अर्धप्रहर* *मृ= मृत्यु* *य= यमघंट* *ग= गुलिक* *प= परिवेश* *इ= इन्द्रचाप* *व्य= व्यतिपात* *उ= उपकेतु* *धू= धूम*

## कारकांश (जेमिनी सूत्र)

| कारक | ग्रह |
|---|---|
| 1 आत्मकारक (आत्मा) | मंगल कारकांश: मिथुन |
| 2 अमात्यकारक (मन / ज्ञानशक्ति) | शुक्र |
| 3 भातृकारक (भाई / बहन) | सूर्य |
| 4 मातृकारक (माता) | शनी |
| 5 पुत्र (संतान) | चंद्र |
| 6 जाति (संबंधी) | गुरु |
| 7 दारा (पति या पत्नी) | बुध |

## अरूढ पद (जेमिनी सूत्र)

| कोड | अरूढ / पद | राशी |
|---|---|---|
| P1 | अरूढ लग्न (पद लग्न) | मीन |
| P2 | धन अरूढ | तुला |
| P3 | पराक्रम भातृपद | कन्या |
| P4 | मात्र (सुख) | सिंह |
| P5 | मंत्र / पुत्र पद | कर्क |
| P6 | रोग / शत्रु पद | तुला |
| P7 | धर / कलत्र /स्त्रीपद | वृश्चिक |
| P8 | मृत्यु / मरण / आयुपद | तुला |
| P9 | पित्र / भाग्य / धर्मपद | कर्क |
| P10 | कर्म / राज्यपद | सिंह |
| P11 | लाभ / आयपद | कर्क |
| P12 | व्यय / उपपद | मिथुन |

## अरूढ चक्र

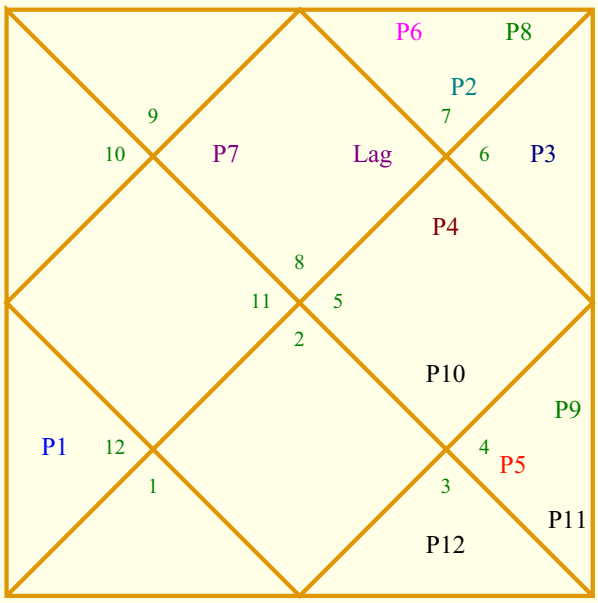


## षोढसवर्ग तालिका

| | ल | चं | र | बु | शु | मं | गु | श | रा | के | मा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| राशी | 8: | 10: | 5 | 5 | 5 | 10: | 8: | 2: | 10: | 4: | 7 |
| होरा | 4: | 4: | 4: | 5 | 4: | 5 | 4: | 4: | 5 | 5 | 5 |
| द्रेष्क्रान | 12: | 10: | 9 | 5 | 9 | 2: | 8: | 6: | 2: | 8: | 11 |
| चतुर्थांश | 11 | 10: | 11 | 5 | 11 | 4: | 8: | 5 | 4: | 10: | 10: |
| सप्तांश | 4: | 5 | 8: | 6: | 9 | 8: | 3 | 10: | 8: | 2: | 10: |
| नवांश | 7 | 11 | 5 | 2: | 6: | 3 | 5 | 1 | 3 | 9 | 11 |
| दशांश | 7 | 8: | 10: | 6: | 10: | 12: | 5 | 2: | 12: | 6: | 11 |
| व्दादशांश | 12: | 12: | 11 | 6: | 11 | 5 | 10: | 7 | 5 | 11 | 12: |
| सोडशांश | 10: | 4: | 1 | 7 | 2: | 11 | 7 | 11 | 11 | 11 | 8: |
| विशान्ष | 4: | 5 | 7 | 12: | 8: | 1 | 12: | 5 | 2: | 2: | 10: |
| चतुर्विशांश | 12: | 8: | 5 | 8: | 6: | 7 | 8: | 2: | 7 | 7 | 4: |
| भम्श | 7 | 9 | 3 | 5 | 4: | 8: | 2: | 3 | 9 | 3 | 8: |
| त्रिंशांश | 6: | 6: | 9 | 1 | 9 | 12: | 6: | 12: | 12: | 12: | 9 |
| खवेदांश | 9 | 3 | 9 | 7 | 11 | 8: | 2: | 12: | 9 | 9 | 8: |
| अक्षवेदांश | 9 | 10: | 4: | 11 | 6: | 5 | 1 | 12: | 6: | 6: | 10: |
| शष्टियांश | 5 | 10: | 12: | 2: | 3 | 11 | 6: | 3 | 1 | 7 | 12: |

| | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ओजराशी गणना | 7 | 5 | 11 | 9 | 8 | 8 | 5 | 7 | 8 | 8 | 6 |

1- मेष | 2 - वृषभ | 3 - मिथुन | 4 - कर्क | 5 - सिंह | 6 - कन्या | 7 - तुला | 8 - वृश्चिक | 9 - धनु | 10 - मकर | 11 - कुंभ | 12 - मीन

## वर्गोत्तम

सूर्य वर्गोत्तम में है।

## षोढसवर्ग अधिपति

| | ल | चं | र | बु | शु | मं | गु | श | रा | के | मा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| राशी | मं | =श | ^र | +र | ~र | =श | +मं | +शु | +श | =चं | शु |
| होरा | चं | ^चं | +चं | +र | ~चं | +र | +चं | ~चं | ~र | +र | र |
| द्रेष्क्राण | गु | =श | +गु | +र | =गु | =शु | +मं | +बु | +शु | +मं | श |
| चतुर्थांश | श | =श | ~श | +र | +श | +चं | +मं | ~र | =चं | ~श | श |
| सप्तांश | चं | +र | +मं | ^बु | =गु | ^मं | ~बु | ^श | =मं | =शु | श |
| नवांश | शु | =श | ^र | +शु | +बु | ~बु | +र | ~मं | +बु | +गु | श |
| दशांश | शु | =मं | ~श | ^बु | +श | +गु | +र | +शु | ~गु | ~बु | श |
| व्दादशांश | गु | =गु | ~श | ^बु | +श | +र | =श | +शु | ~र | ~श | गु |
| सोडशांश | श | ^चं | +मं | +शु | ^शु | =श | ~शु | ^श | +श | ~श | मं |
| विशान्ष | चं | +र | ~शु | =गु | =मं | ^मं | ^गु | ~र | +शु | =शु | श |
| चतुर्विशांश | गु | =मं | ^र | =मं | +बु | =शु | +मं | +शु | +शु | =शु | चं |
| भम्श | शु | =गु | =बु | +र | ~चं | ^मं | ~शु | +बु | ~गु | ~बु | मं |
| त्रिंशांश | बु | +बु | +गु | =मं | =गु | +गु | ~बु | =गु | ~गु | +गु | गु |
| खवेदांश | गु | +बु | +गु | +शु | +श | ^मं | ~शु | =गु | ~गु | +गु | मं |
| अक्षवेदांश | गु | =श | +चं | =श | +बु | +र | +मं | =गु | +बु | ~बु | श |
| शष्टियांश | र | =श | +गु | +शु | +बु | =श | ~बु | +बु | =मं | =शु | गु |

^ स्ववर्ग | + मैत्रीपूर्ण | = सम | ~ शत्रु

## वर्ग भेद

स्ववर्ग और उच्च वर्ग के लिए अंक दिए गए हैं

| ग्रह | षढवर्ग | सप्तवर्ग | दशवर्ग | षोढसवर्ग |
|---|---|---|---|---|

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| चंद्र | 1-... | 1-... | 2-पारिजातांश | 2-भेदकांश |
| सूर्य | 2-सुक्ष्ममांश | 2-सुक्ष्ममांश | 3-उत्तमांश | 4-नागपुष्पांश |
| बुध | 1-... | 2-सुक्ष्ममांश | 3-उत्तमांश | 3-कुसुमांश |
| शुक्र | 0- | 0- | 1-... | 1-... |
| मंगल | 1-... | 2-सुक्ष्ममांश | 2-पारिजातांश | 5-कन्दुकांश |
| गुरू | 1-... | 1-... | 1-... | 2-भेदकांश |
| शनी | 1-... | 2-सुक्ष्ममांश | 3-उत्तमांश | 3-कुसुमांश |

## षोढ़सवर्ग तालिका

### राशी [D1]

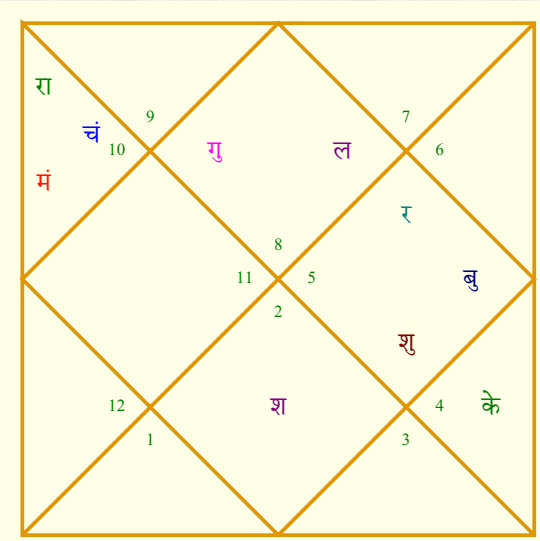


### होरा [D2]

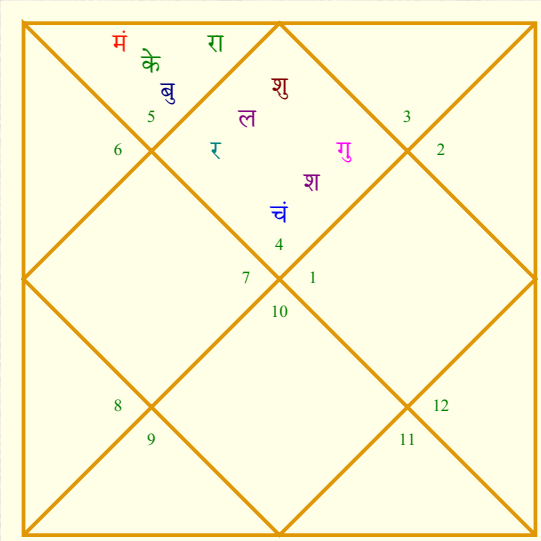


### द्रेष्काण [D3]

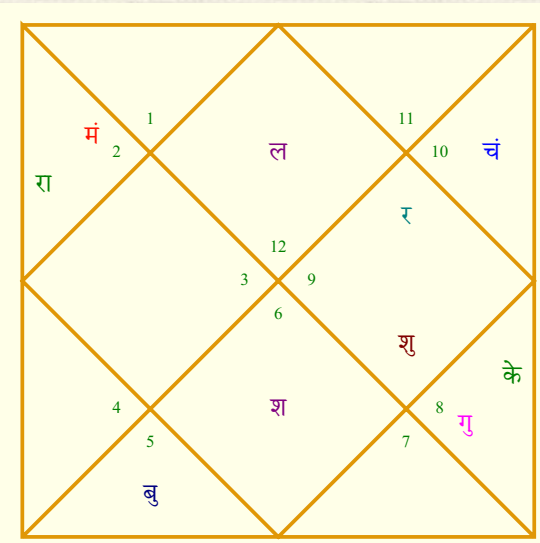


### चतुर्थांश [D4]

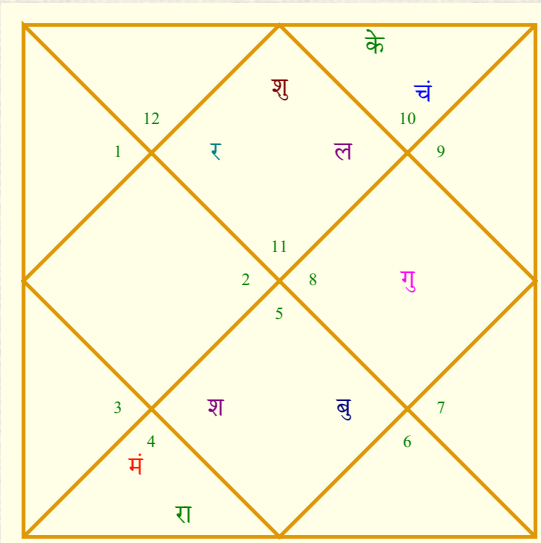

## सप्तांश [D7]

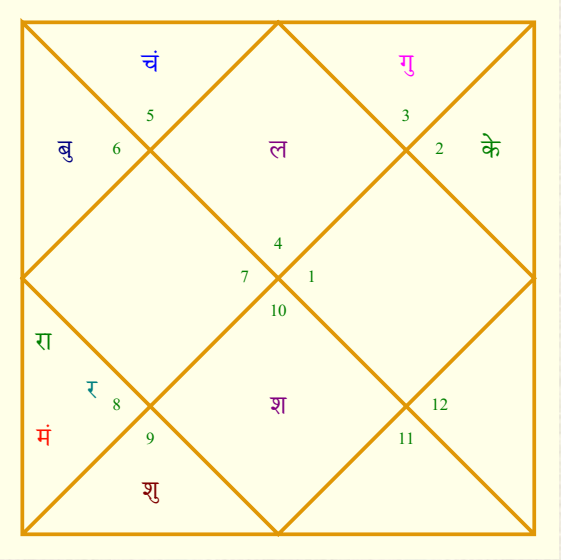


## नवांश [D9]

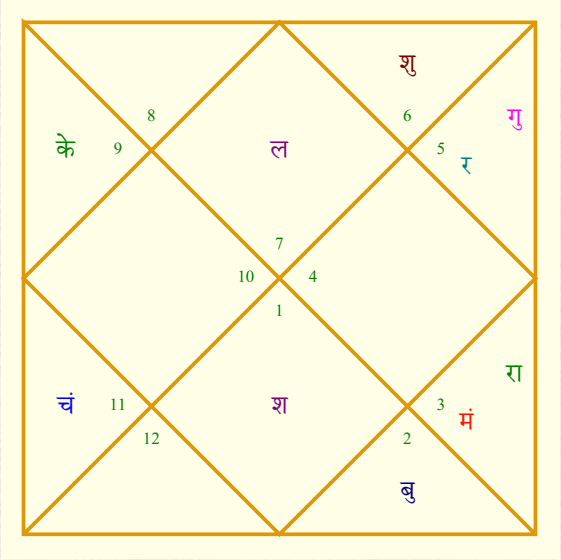


## दशांश [D10]

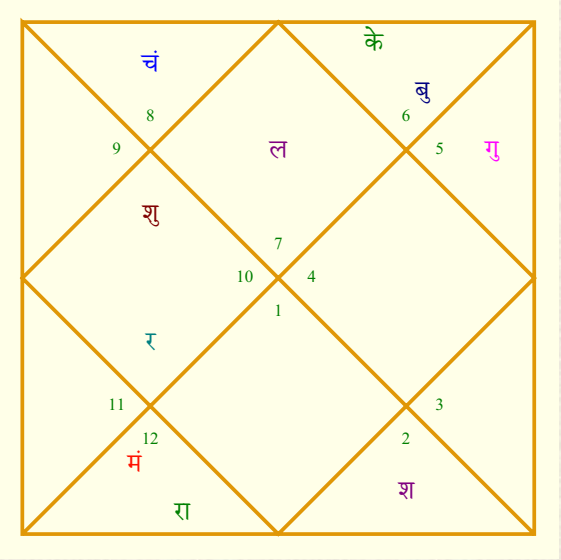


## व्दादशांश [D12]

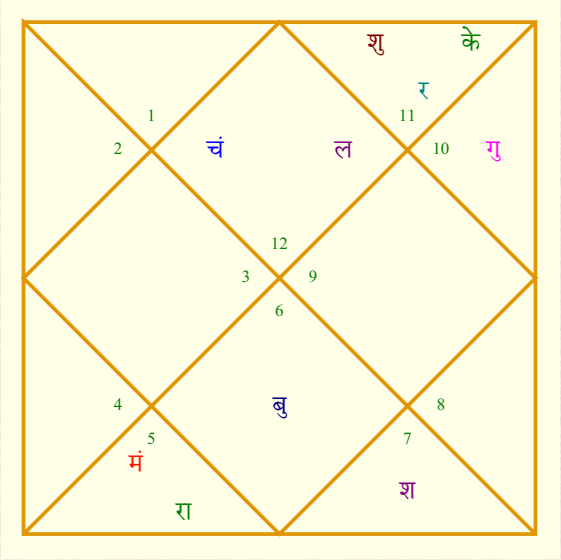


## सोडशांश [D16]

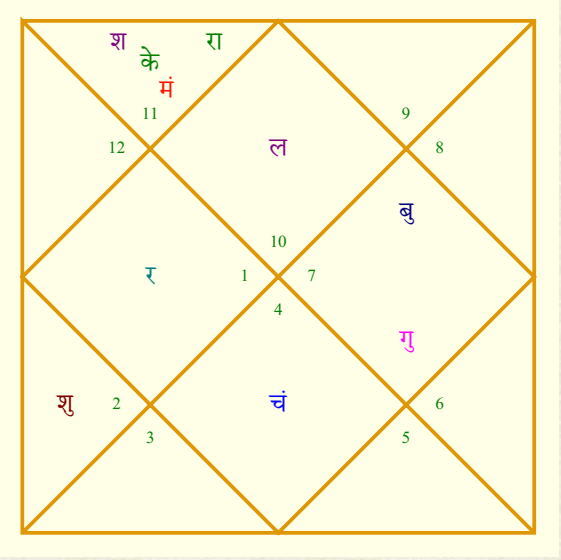


## विशान्ष [D20]

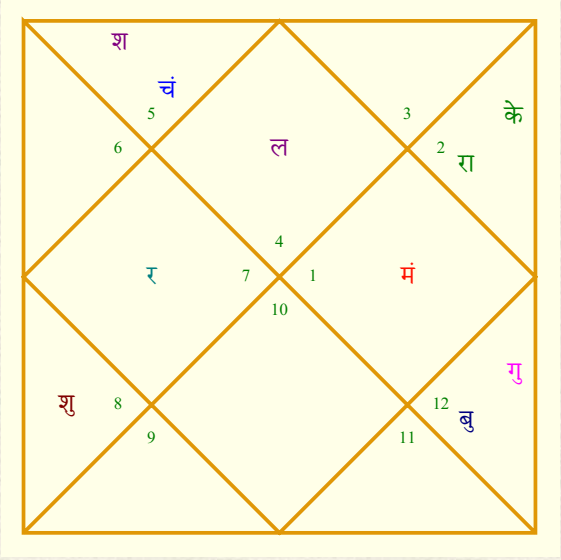

## चतुर्विंशांश [D24]

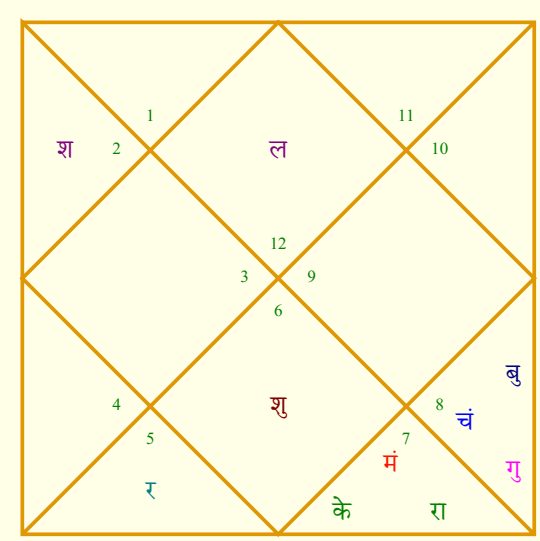


## भम्श [D27]

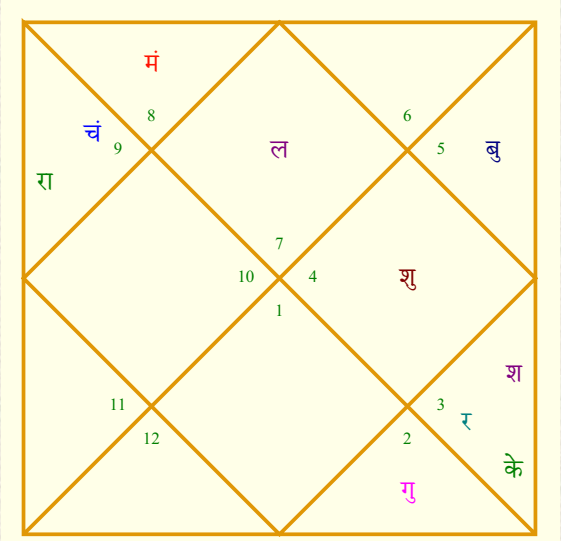


## त्रिंशांश [D30]

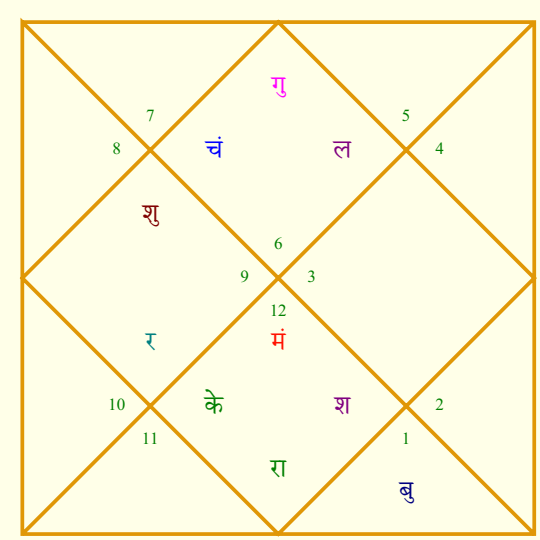


## खवेदांश [D40]

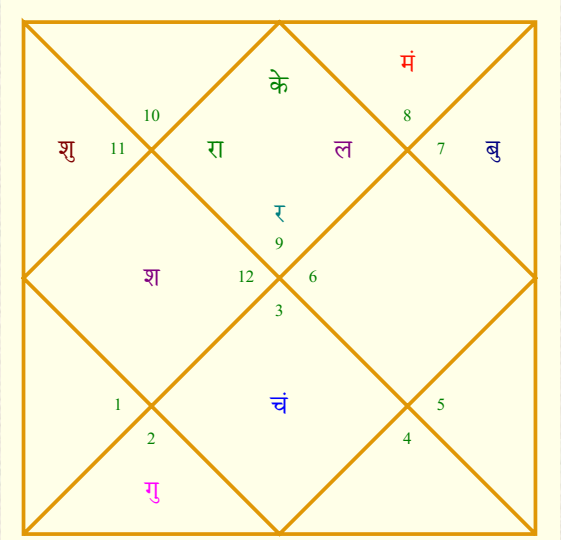


## अक्षवेदांश [D45]

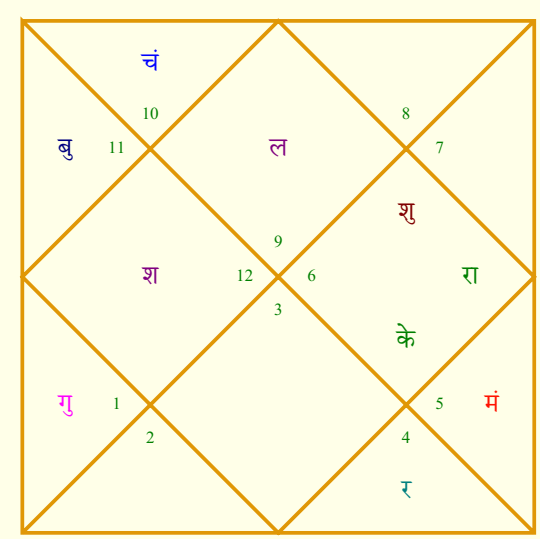


## शष्टियांश [D60]

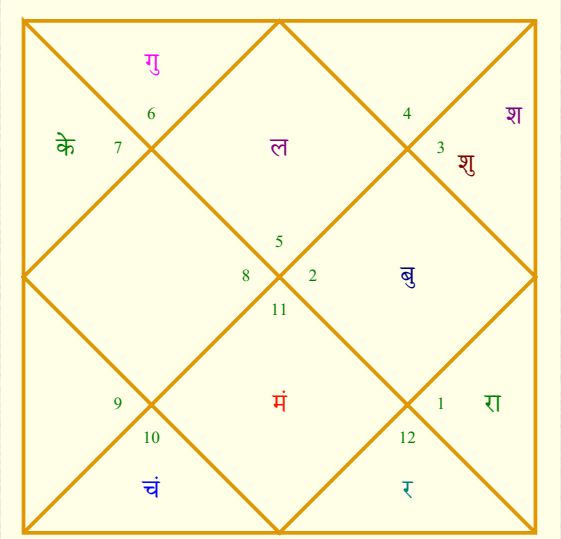

## प्रस्तार अष्टकवर्ग - चंद्र

| | चं | र | बु | शु | मं | गु | श | ल | कुल |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मेष | | | | 1 | | | | 1 | **2** |
| वृषभ | | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | | | **5** |
| मिथुन | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | | | **6** |
| कर्क | 1 | | | | | | 1 | | **2** |
| सिंह | | | 1 | | | 1 | | 1 | **3** |
| कन्या | | | | | 1 | 1 | 1 | 1 | **4** |
| तुला | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | | **7** |
| वृश्चिक | 1 | | 1 | 1 | 1 | 1 | | | **5** |
| धनु | | | 1 | 1 | | | | | **2** |
| मकर | 1 | 1 | | | | | | 1 | **3** |
| कुंभ | | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | | | **5** |
| मीन | 1 | 1 | 1 | | 1 | | 1 | | **5** |
| **कुल** | **6** | **6** | **8** | **7** | **7** | **7** | **4** | **4** | **49** |

## प्रस्तार अष्टकवर्ग - सूर्य

| | चं | र | बु | शु | मं | गु | श | ल | कुल |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मेष | | 1 | 1 | | 1 | 1 | | 1 | **5** |
| वृषभ | | 1 | 1 | | | | 1 | | **3** |
| मिथुन | 1 | 1 | 1 | | | | 1 | | **4** |
| कर्क | | | 1 | 1 | 1 | 1 | | | **4** |
| सिंह | | 1 | | | 1 | | 1 | 1 | **4** |
| कन्या | | 1 | | | 1 | 1 | | 1 | **4** |
| तुला | 1 | | 1 | | 1 | | | 1 | **7** |
| वृश्चिक | 1 | 1 | | | 1 | | 1 | | **4** |
| धनु | | | 1 | | | | 1 | | **2** |
| मकर | | | 1 | 1 | 1 | | 1 | 1 | **5** |
| कुंभ | | 1 | | 1 | 1 | | 1 | 1 | **5** |
| मीन | 1 | 1 | | | | 1 | 1 | | **4** |

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| **कुल** | **4** | **8** | **7** | **3** | **8** | **4** | **8** | **6** | **48** |

## प्रस्तार अष्टकवर्ग - बुध

| | चं | र | बु | शु | मं | गु | श | ल | कुल |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मेष | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | | 1 | **7** |
| वृषभ | | | 1 | | | | 1 | | **2** |
| मिथुन | 1 | 1 | 1 | 1 | | 1 | 1 | 1 | **7** |
| कर्क | | 1 | 1 | | 1 | | | | **3** |
| सिंह | 1 | | 1 | 1 | 1 | | 1 | 1 | **6** |
| कन्या | | | | 1 | 1 | 1 | | 1 | **4** |
| तुला | 1 | | 1 | 1 | 1 | 1 | | | **5** |
| वृश्चिक | 1 | | | 1 | 1 | | 1 | 1 | **5** |
| धनु | | 1 | 1 | 1 | | | 1 | 1 | **5** |
| मकर | | 1 | 1 | | 1 | | 1 | | **4** |
| कुंभ | 1 | | | | 1 | | 1 | 1 | **4** |
| मीन | | | | 1 | | | 1 | | **2** |
| **कुल** | **6** | **5** | **8** | **8** | **8** | **4** | **8** | **7** | **54** |

## प्रस्तार अष्टकवर्ग - शुक्र

| | चं | र | बु | शु | मं | गु | श | ल | कुल |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मेष | 1 | | 1 | 1 | | | | | **3** |
| वृषभ | 1 | | | 1 | 1 | | | | **3** |
| मिथुन | | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | | 1 | **6** |
| कर्क | | 1 | | | | 1 | 1 | 1 | **4** |
| सिंह | 1 | | | 1 | | 1 | 1 | | **4** |
| कन्या | 1 | | | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | **6** |
| तुला | | | 1 | 1 | | | | | **2** |
| वृश्चिक | 1 | | | 1 | 1 | | | 1 | **4** |
| धनु | 1 | | 1 | 1 | 1 | | 1 | 1 | **6** |
| मकर | 1 | | 1 | | | | 1 | 1 | **4** |
| कुंभ | 1 | | | | | | 1 | 1 | **3** |

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मीन | 1 | 1 | | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | **7** |
| **कुल** | **9** | **3** | **5** | **9** | **6** | **5** | **7** | **8** | **52** |

## प्रस्तार अष्टकवर्ग - मंगल

| | चं | र | बु | शु | मं | गु | श | ल | कुल |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मेष | | | | | 1 | 1 | | 1 | **3** |
| वृषभ | | 1 | | | | | 1 | | **2** |
| मिथुन | 1 | 1 | 1 | 1 | | | | | **4** |
| कर्क | | | | 1 | 1 | | | | **2** |
| सिंह | | | | | 1 | 1 | 1 | 1 | **4** |
| कन्या | | | | | | 1 | | 1 | **2** |
| तुला | | 1 | 1 | | 1 | 1 | | | **4** |
| वृश्चिक | 1 | | | | 1 | | 1 | 1 | **4** |
| धनु | | 1 | 1 | | | | 1 | | **3** |
| मकर | | 1 | 1 | 1 | 1 | | 1 | 1 | **6** |
| कुंभ | | | | | 1 | | 1 | | **2** |
| मीन | 1 | | | 1 | | | 1 | | **3** |
| **कुल** | **3** | **5** | **4** | **4** | **7** | **4** | **7** | **5** | **39** |

## प्रस्तार अष्टकवर्ग - गुरू

| | चं | र | बु | शु | मं | गु | श | ल | कुल |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मेष | | 1 | 1 | 1 | 1 | | 1 | 1 | **6** |
| वृषभ | 1 | 1 | 1 | 1 | | 1 | | 1 | **6** |
| मिथुन | | 1 | 1 | 1 | | 1 | | | **4** |
| कर्क | 1 | | | | 1 | | 1 | 1 | **4** |
| सिंह | | 1 | 1 | | 1 | 1 | | 1 | **5** |
| कन्या | 1 | 1 | 1 | 1 | | 1 | 1 | 1 | **7** |
| तुला | | 1 | | | 1 | | 1 | | **3** |
| वृश्चिक | 1 | 1 | 1 | | 1 | 1 | | 1 | **6** |
| धनु | | | 1 | 1 | | 1 | | 1 | **4** |
| मकर | | | 1 | 1 | 1 | 1 | | | **4** |

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कुंभ | 1 | 1 | | | 1 | 1 | | 1 | **5** |
| मीन | | 1 | | | | | | 1 | **2** |
| **कुल** | **5** | **9** | **8** | **6** | **7** | **8** | **4** | **9** | **56** |

## प्रस्तार अष्टकवर्ग - शनी

| | चं | र | बु | शु | मं | गु | श | ल | कुल |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मेष | | | 1 | | | 1 | | 1 | **3** |
| वृषभ | | 1 | 1 | | 1 | | | | **3** |
| मिथुन | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | | | | **5** |
| कर्क | | | 1 | 1 | | | 1 | | **3** |
| सिंह | | 1 | | | | | | 1 | **2** |
| कन्या | | 1 | | | | 1 | 1 | 1 | **4** |
| तुला | | | | | 1 | 1 | 1 | | **3** |
| वृश्चिक | 1 | 1 | | | 1 | | | 1 | **4** |
| धनु | | | | | 1 | | | | **1** |
| मकर | | | 1 | 1 | | | | 1 | **3** |
| कुंभ | | 1 | | | | | | 1 | **2** |
| मीन | 1 | 1 | 1 | | 1 | 1 | 1 | | **6** |
| **कुल** | **3** | **7** | **6** | **3** | **6** | **4** | **4** | **6** | **39** |

## अष्टकवर्ग

| | चं | र | बु | शु | मं | गु | श | कुल |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मेष | 2 | 5 | 7 | 3 | 3 | 6 | 3 | **29** |
| वृषभ | 5 | 3 | 2 | 3 | 2 | 6 | 3 | **24** |
| मिथुन | 6 | 4 | 7 | 6 | 4 | 4 | 5 | **36** |
| कर्क | 2 | 4 | 3 | 4 | 2 | 4 | 3 | **22** |
| सिंह | 3 | 4 | 6 | 4 | 4 | 5 | 2 | **28** |
| कन्या | 4 | 4 | 4 | 6 | 2 | 7 | 4 | **31** |
| तुला | 7 | 4 | 5 | 2 | 4 | 3 | 3 | **28** |
| वृश्चिक | 5 | 4 | 5 | 4 | 4 | 6 | 4 | **32** |
| धनु | 2 | 2 | 5 | 6 | 3 | 4 | 1 | **23** |

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मकर | 3 | 5 | 4 | 4 | 6 | 4 | 3 | **29** |
| कुंभ | 5 | 5 | 4 | 3 | 2 | 5 | 2 | **26** |
| मीन | 5 | 4 | 2 | 7 | 3 | 2 | 6 | **29** |
| **कुल** | **49** | **48** | **54** | **52** | **39** | **56** | **39** | **337** |

## अष्टकवर्ग कुंडलियाँ

### चंद्र अष्टकवर्ग 49

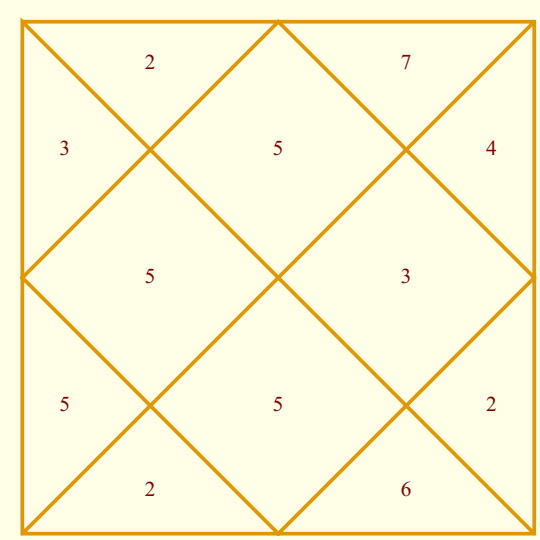


### सूर्य अष्टकवर्ग 48

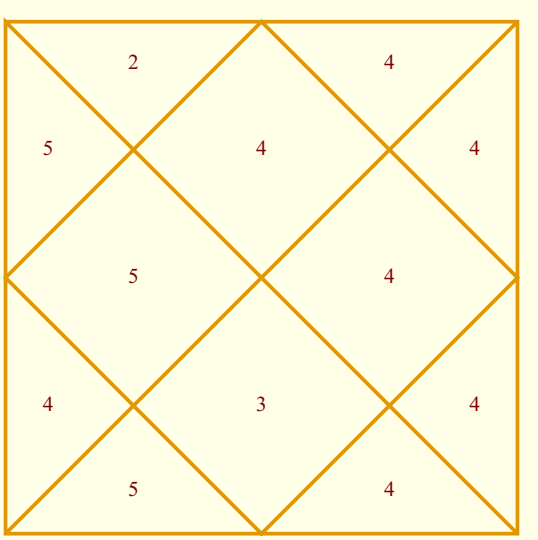


### बुध अष्टकवर्ग 54

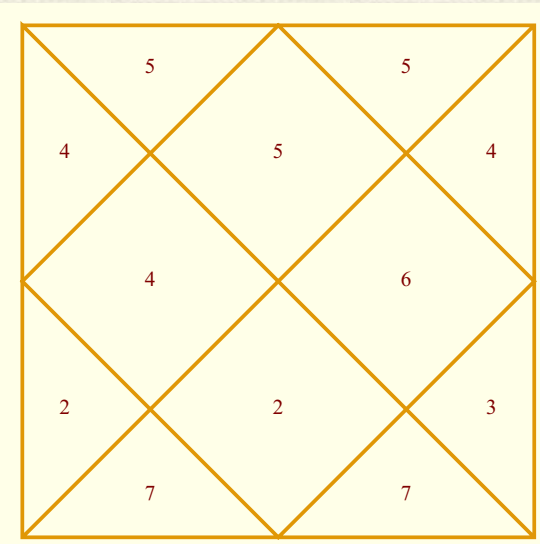


### शुक्र अष्टकवर्ग 52

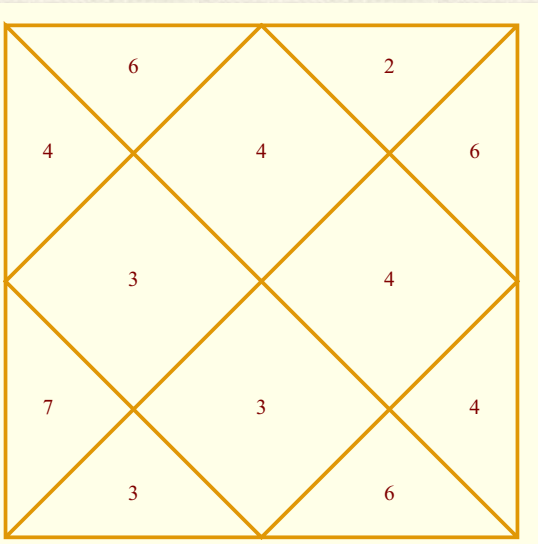

## मंगल अष्टकवर्ग 39

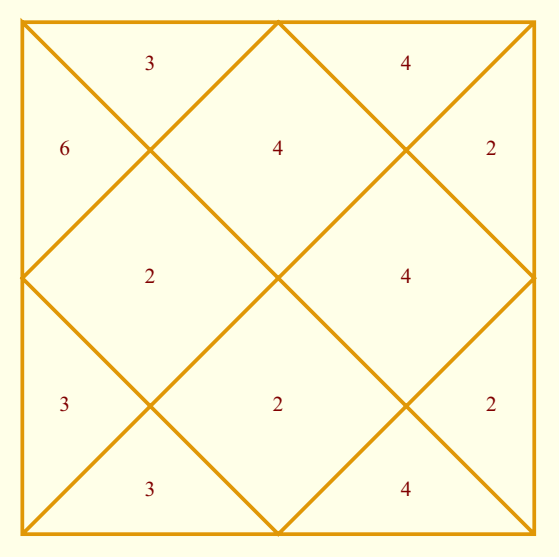


## गुरू अष्टकवर्ग 56

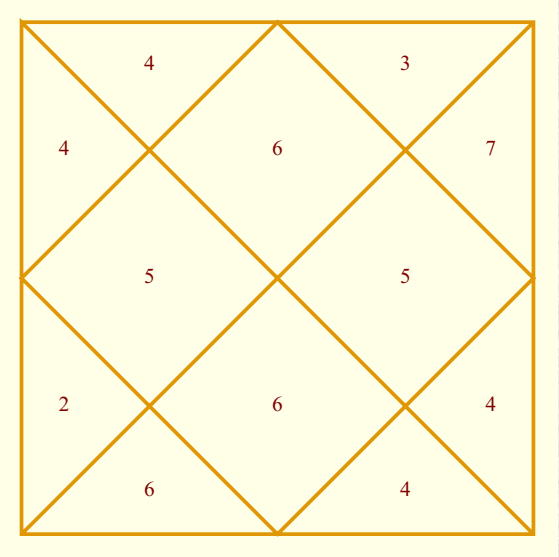


## शनी अष्टकवर्ग 39

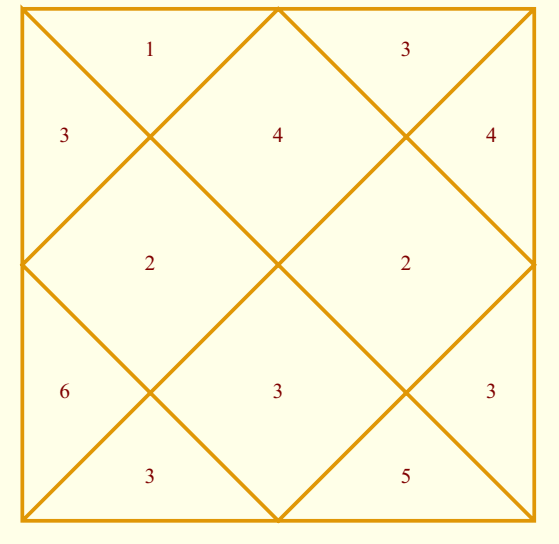


## सर्व अष्टकवर्ग 337

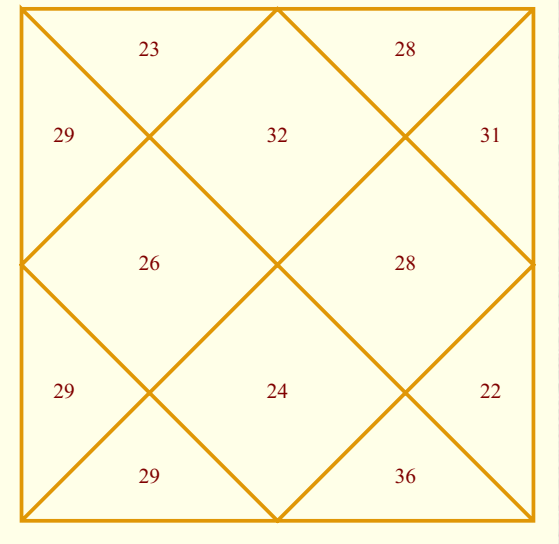

## अष्टकवर्ग - त्रिकोण हांस

### चंद्र अष्टकवर्ग 13

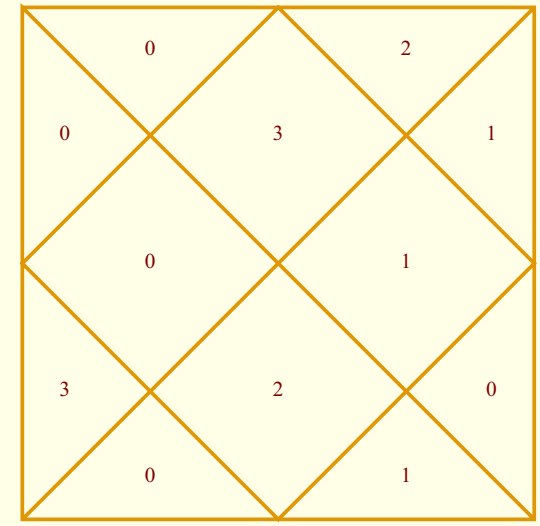


### सूर्य अष्टकवर्ग 9

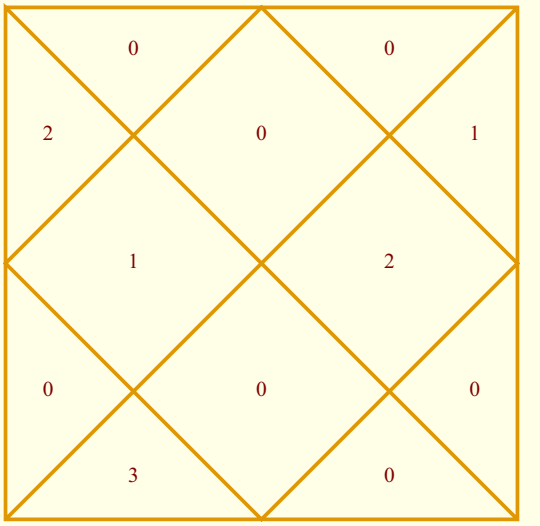


### बुध अष्टकवर्ग 15

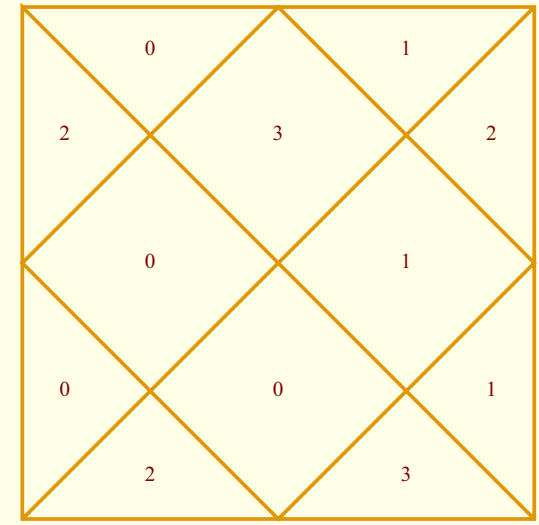


### शुक्र अष्टकवर्ग 16

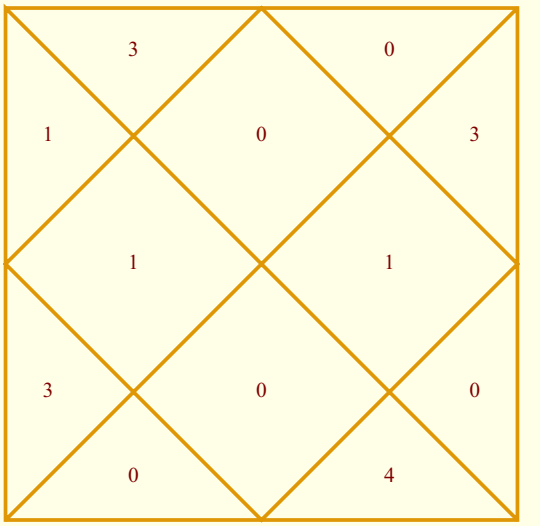

## मंगल अष्टकवर्ग 12

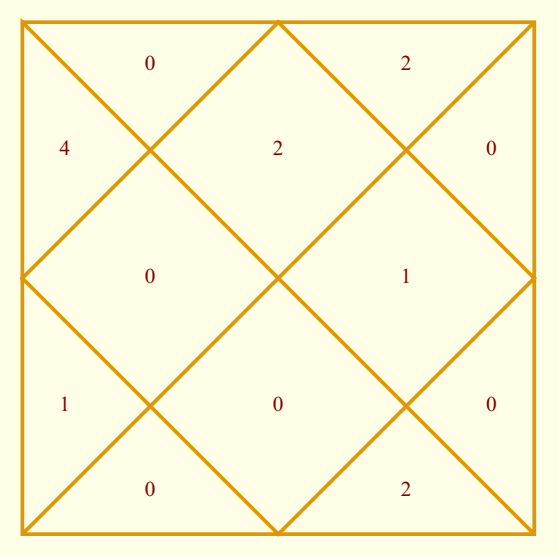


## गुरू अष्टकवर्ग 17

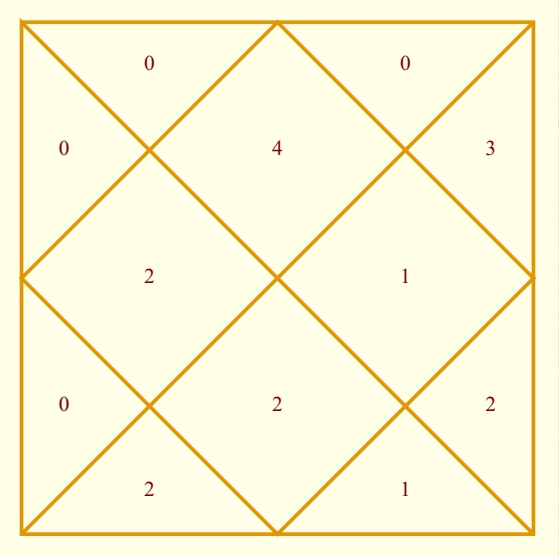


## शनी अष्टकवर्ग 12

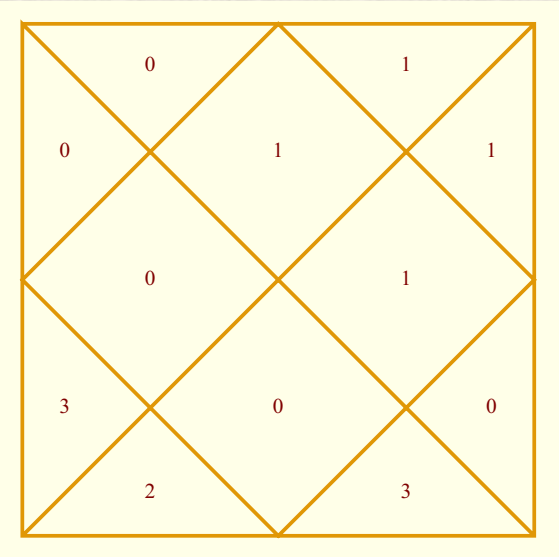


## सर्व अष्टकवर्ग 94

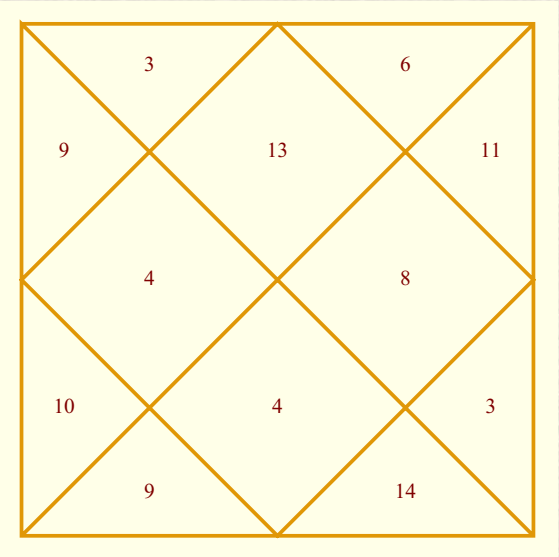

## अष्टकवर्ग - एकाधिपत्य हांस

### चंद्र अष्टकवर्ग 11

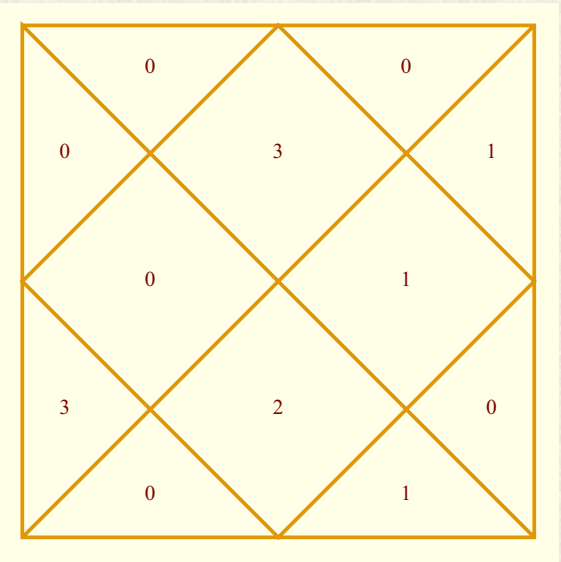


### सूर्य अष्टकवर्ग 8

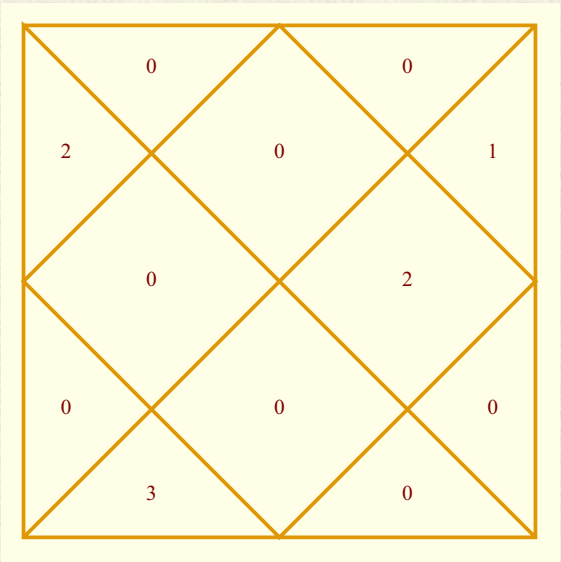


### बुध अष्टकवर्ग 13

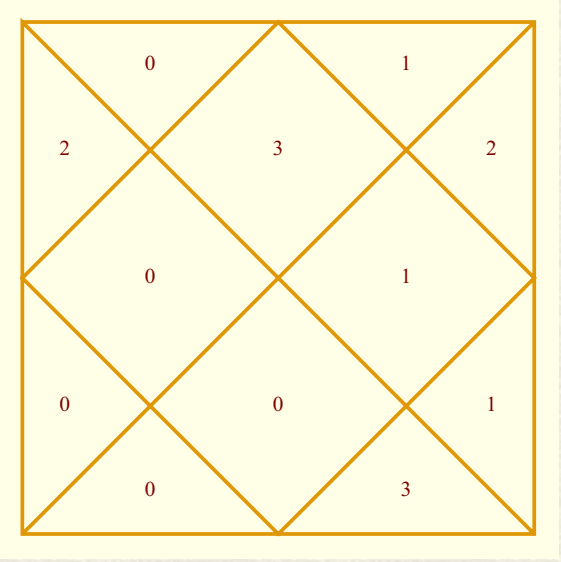


### शुक्र अष्टकवर्ग 9

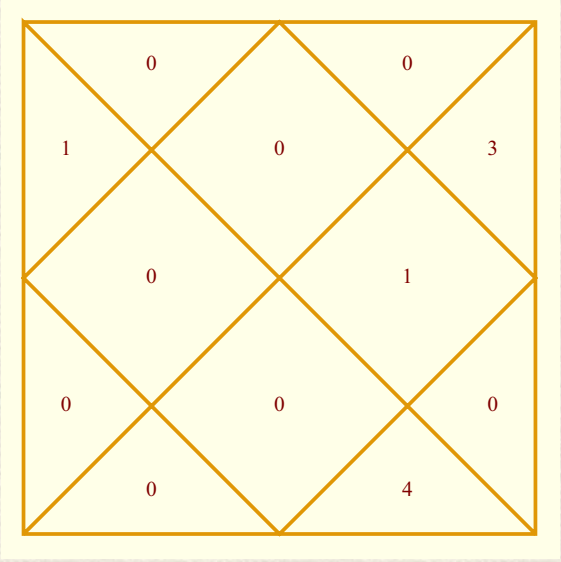

### मंगल अष्टकवर्ग 12

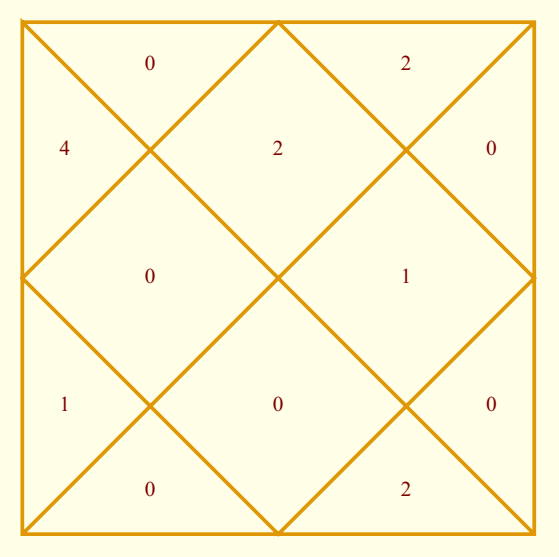


### गुरू अष्टकवर्ग 15

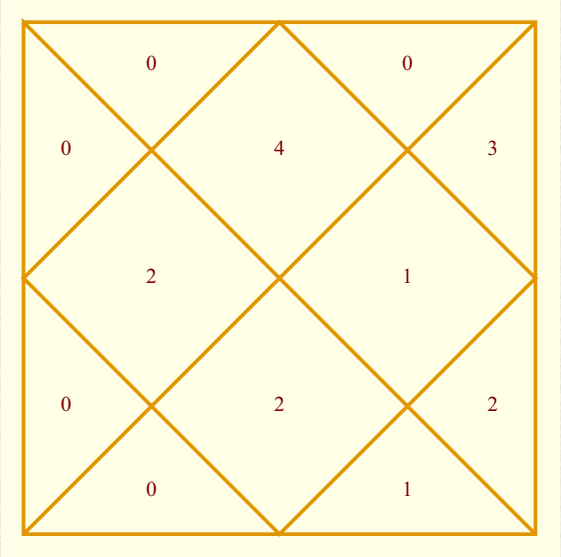


### शनी अष्टकवर्ग 11

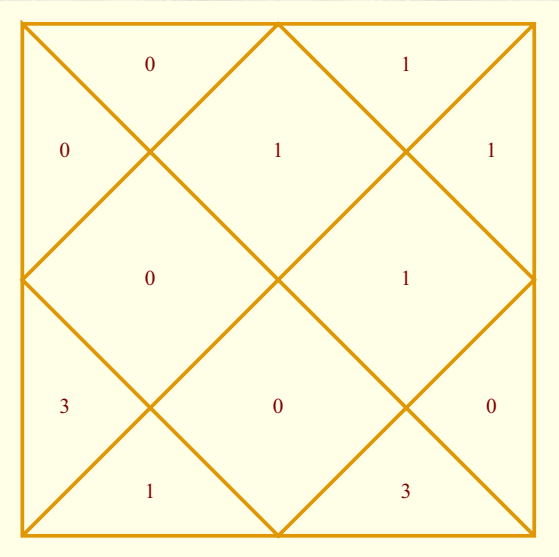


### सर्व अष्टकवर्ग 79

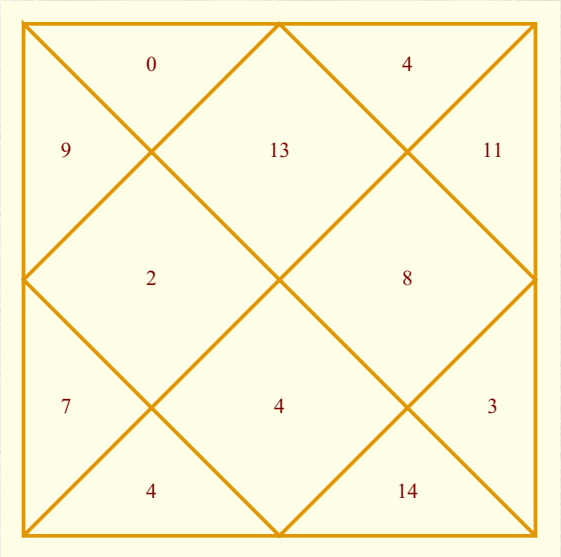


## विंषोत्तरी दशा का संक्षिप्त विवरण

दशा आरम्भ की आयु (वर्ष: मास: दिवस) (YY:MM:DD)

चंद्र > 01:08:16 | मंगल > 11:08:16 | राहु > 18:08:16 | गुरू > 36:08:16 | शनी > 52:08:16 | बुध > 71:08:16 | केतु > 88:08:16

## दशा और भुक्ती का विवरण (साल = 365.25 दिन)

### जन्म के समय दशा का भोग्य काल = सूर्य 1 साल, 8 मास, 15 दिन

| दशा | भुक्ती | आरंभ | अन्त्य |
|---|---|---|---|
| सूर्य | बुध | 02-09-1971 | 11-01-1972 |
| सूर्य | केतू | 11-01-1972 | 18-05-1972 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| सूर्य | शुक्र | 18-05-1972 | 18-05-1973 |
| चन्द्र | चन्द्र | 18-05-1973 | 18-03-1974 |
| चन्द्र | मंगल | 18-03-1974 | 17-10-1974 |
| चन्द्र | राह् | 17-10-1974 | 17-04-1976 |
| चन्द्र | गुरू | 17-04-1976 | 17-08-1977 |
| चन्द्र | शनि | 17-08-1977 | 18-03-1979 |
| चन्द्र | बुध | 18-03-1979 | 17-08-1980 |
| चन्द्र | केतू | 17-08-1980 | 18-03-1981 |
| चन्द्र | शुक्र | 18-03-1981 | 17-11-1982 |
| चन्द्र | सूर्य | 17-11-1982 | 18-05-1983 |
| मंगल | मंगल | 18-05-1983 | 14-10-1983 |
| मंगल | राह् | 14-10-1983 | 01-11-1984 |
| मंगल | गुरू | 01-11-1984 | 08-10-1985 |
| मंगल | शनि | 08-10-1985 | 17-11-1986 |
| मंगल | बुध | 17-11-1986 | 14-11-1987 |
| मंगल | केतू | 14-11-1987 | 11-04-1988 |
| मंगल | शुक्र | 11-04-1988 | 11-06-1989 |
| मंगल | सूर्य | 11-06-1989 | 17-10-1989 |
| मंगल | चन्द्र | 17-10-1989 | 18-05-1990 |
| राह् | राह् | 18-05-1990 | 28-01-1993 |
| राह् | गुरू | 28-01-1993 | 24-06-1995 |
| राह् | शनि | 24-06-1995 | 30-04-1998 |
| राह् | बुध | 30-04-1998 | 16-11-2000 |
| राह् | केतू | 16-11-2000 | 05-12-2001 |
| राह् | शुक्र | 05-12-2001 | 04-12-2004 |
| राह् | सूर्य | 04-12-2004 | 29-10-2005 |
| राह् | चन्द्र | 29-10-2005 | 30-04-2007 |
| राह् | मंगल | 30-04-2007 | 18-05-2008 |
| गुरू | गुरू | 18-05-2008 | 06-07-2010 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| गुरू | शनि | 06-07-2010 | 16-01-2013 |
| गुरू | बुध | 16-01-2013 | 24-04-2015 |
| गुरू | केतू | 24-04-2015 | 30-03-2016 |
| गुरू | शुक्र | 30-03-2016 | 29-11-2018 |
| गुरू | सूर्य | 29-11-2018 | 17-09-2019 |
| गुरू | चन्द्र | 17-09-2019 | 16-01-2021 |
| गुरू | मंगल | 16-01-2021 | 23-12-2021 |
| गुरू | राह् | 23-12-2021 | 18-05-2024 |
| शनि | शनि | 18-05-2024 | 21-05-2027 |
| शनि | बुध | 21-05-2027 | 28-01-2030 |
| शनि | केतू | 28-01-2030 | 09-03-2031 |
| शनि | शुक्र | 09-03-2031 | 09-05-2034 |
| शनि | सूर्य | 09-05-2034 | 21-04-2035 |
| शनि | चन्द्र | 21-04-2035 | 19-11-2036 |
| शनि | मंगल | 19-11-2036 | 29-12-2037 |
| शनि | राह् | 29-12-2037 | 04-11-2040 |
| शनि | गुरू | 04-11-2040 | 18-05-2043 |
| बुध | बुध | 18-05-2043 | 14-10-2045 |
| बुध | केतू | 14-10-2045 | 11-10-2046 |
| बुध | शुक्र | 11-10-2046 | 11-08-2049 |
| बुध | सूर्य | 11-08-2049 | 17-06-2050 |
| बुध | चन्द्र | 17-06-2050 | 17-11-2051 |
| बुध | मंगल | 17-11-2051 | 13-11-2052 |
| बुध | राह् | 13-11-2052 | 03-06-2055 |
| बुध | गुरू | 03-06-2055 | 07-09-2057 |
| बुध | शनि | 07-09-2057 | 18-05-2060 |
| केतू | केतू | 18-05-2060 | 14-10-2060 |
| केतू | शुक्र | 14-10-2060 | 14-12-2061 |
| केतू | सूर्य | 14-12-2061 | 21-04-2062 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| केतू | चन्द्र | 21-04-2062 | 20-11-2062 |
| केतू | मंगल | 20-11-2062 | 18-04-2063 |
| केतू | राह् | 18-04-2063 | 05-05-2064 |
| केतू | गुरू | 05-05-2064 | 11-04-2065 |
| केतू | शनि | 11-04-2065 | 21-05-2066 |
| केतू | बुध | 21-05-2066 | 18-05-2067 |

**नीचे खिंची गई रेखा, आपके आयुष्य को बताने वाली रेखा नही है।**

## प्रत्यंतर दशा

### दशा : शनी अपहार : शनी

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1.श | 18-05-2024 >> 08-11-2024 | 2.बु | 08-11-2024 >> 12-04-2025 |
| 3.के | 12-04-2025 >> 15-06-2025 | 4.शु | 15-06-2025 >> 15-12-2025 |
| 5.र | 15-12-2025 >> 08-02-2026 | 6.चं | 08-02-2026 >> 11-05-2026 |
| 7.मं | 11-05-2026 >> 14-07-2026 | 8.रा | 14-07-2026 >> 26-12-2026 |
| 9.गु | 26-12-2026 >> 21-05-2027 | | |

### दशा : शनी अपहार : बुध

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1.बु | 21-05-2027 >> 08-10-2027 | 2.के | 08-10-2027 >> 04-12-2027 |
| 3.शु | 04-12-2027 >> 16-05-2028 | 4.र | 16-05-2028 >> 04-07-2028 |
| 5.चं | 04-07-2028 >> 24-09-2028 | 6.मं | 24-09-2028 >> 20-11-2028 |
| 7.रा | 20-11-2028 >> 17-04-2029 | 8.गु | 17-04-2029 >> 26-08-2029 |
| 9.श | 26-08-2029 >> 28-01-2030 | | |

### दशा : शनी अपहार : केतु

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1.के | 28-01-2030 >> 21-02-2030 | 2.शु | 21-02-2030 >> 30-04-2030 |
| 3.र | 30-04-2030 >> 20-05-2030 | 4.चं | 20-05-2030 >> 23-06-2030 |
| 5.मं | 23-06-2030 >> 16-07-2030 | 6.रा | 16-07-2030 >> 15-09-2030 |
| 7.गु | 15-09-2030 >> 08-11-2030 | 8.श | 08-11-2030 >> 11-01-2031 |
| 9.बु | 11-01-2031 >> 09-03-2031 | | |

### दशा : शनी अपहार : शुक्र

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1.शु | 09-03-2031 >> 18-09-2031 | 2.र | 18-09-2031 >> 15-11-2031 |
| 3.चं | 15-11-2031 >> 19-02-2032 | 4.मं | 19-02-2032 >> 27-04-2032 |
| 5.रा | 27-04-2032 >> 17-10-2032 | 6.गु | 17-10-2032 >> 20-03-2033 |
| 7.श | 20-03-2033 >> 20-09-2033 | 8.बु | 20-09-2033 >> 02-03-2034 |
| 9.के | 02-03-2034 >> 09-05-2034 | | |

### दशा : शनी अपहार : सूर्य

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1.र | 09-05-2034 >> 26-05-2034 | 2.चं | 26-05-2034 >> 24-06-2034 |
| 3.मं | 24-06-2034 >> 14-07-2034 | 4.रा | 14-07-2034 >> 04-09-2034 |
| 5.गु | 04-09-2034 >> 21-10-2034 | 6.श | 21-10-2034 >> 15-12-2034 |
| 7.बु | 15-12-2034 >> 02-02-2035 | 8.के | 02-02-2035 >> 22-02-2035 |
| 9.शु | 22-02-2035 >> 21-04-2035 | | |

### दशा : शनी अपहार : चंद्र

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1.चं | 21-04-2035 >> 08-06-2035 | 2.मं | 08-06-2035 >> 12-07-2035 |
| 3.रा | 12-07-2035 >> 07-10-2035 | 4.गु | 07-10-2035 >> 23-12-2035 |
| 5.श | 23-12-2035 >> 23-03-2036 | 6.बु | 23-03-2036 >> 13-06-2036 |
| 7.के | 13-06-2036 >> 17-07-2036 | 8.शु | 17-07-2036 >> 21-10-2036 |
| 9.र | 21-10-2036 >> 19-11-2036 | | |

### दशा : शनी अपहार : मंगल

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1.मं | 19-11-2036 >> 13-12-2036 | 2.रा | 13-12-2036 >> 12-02-2037 |
| 3.गु | 12-02-2037 >> 07-04-2037 | 4.श | 07-04-2037 >> 10-06-2037 |
| 5.बु | 10-06-2037 >> 06-08-2037 | 6.के | 06-08-2037 >> 30-08-2037 |
| 7.शु | 30-08-2037 >> 05-11-2037 | 8.र | 05-11-2037 >> 25-11-2037 |
| 9.चं | 25-11-2037 >> 29-12-2037 | | |

### दशा : शनी अपहार : राहु

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1.रा | 29-12-2037 >> 03-06-2038 | 2.गु | 03-06-2038 >> 20-10-2038 |
| 3.श | 20-10-2038 >> 03-04-2039 | 4.बु | 03-04-2039 >> 28-08-2039 |
| 5.के | 28-08-2039 >> 28-10-2039 | 6.शु | 28-10-2039 >> 18-04-2040 |
| 7.र | 18-04-2040 >> 10-06-2040 | 8.चं | 10-06-2040 >> 04-09-2040 |
| 9.मं | 04-09-2040 >> 04-11-2040 | | |

### दशा : शनी अपहार : गुरू

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1.गु | 04-11-2040 >> 07-03-2041 | 2.श | 07-03-2041 >> 01-08-2041 |
| 3.बु | 01-08-2041 >> 10-12-2041 | 4.के | 10-12-2041 >> 02-02-2042 |
| 5.शु | 02-02-2042 >> 06-07-2042 | 6.र | 06-07-2042 >> 21-08-2042 |
| 7.चं | 21-08-2042 >> 07-11-2042 | 8.मं | 07-11-2042 >> 31-12-2042 |
| 9.रा | 31-12-2042 >> 18-05-2043 | | |

### दशा : बुध अपहार : बुध

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1.बु | 18-05-2043 >> 20-09-2043 | 2.के | 20-09-2043 >> 10-11-2043 |
| 3.शु | 10-11-2043 >> 05-04-2044 | 4.र | 05-04-2044 >> 19-05-2044 |
| 5.चं | 19-05-2044 >> 31-07-2044 | 6.मं | 31-07-2044 >> 20-09-2044 |
| 7.रा | 20-09-2044 >> 30-01-2045 | 8.गु | 30-01-2045 >> 28-05-2045 |
| 9.श | 28-05-2045 >> 14-10-2045 | | |

### दशा : बुध अपहार : केतु

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1.के | 14-10-2045 >> 04-11-2045 | 2.शु | 04-11-2045 >> 03-01-2046 |
| 3.र | 03-01-2046 >> 22-01-2046 | 4.चं | 22-01-2046 >> 21-02-2046 |
| 5.मं | 21-02-2046 >> 14-03-2046 | 6.रा | 14-03-2046 >> 07-05-2046 |
| 7.गु | 07-05-2046 >> 24-06-2046 | 8.श | 24-06-2046 >> 21-08-2046 |
| 9.बु | 21-08-2046 >> 11-10-2046 | | |

### दशा : बुध अपहार : शुक्र

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1.शु | 11-10-2046 >> 02-04-2047 | 2.र | 02-04-2047 >> 23-05-2047 |
| 3.चं | 23-05-2047 >> 18-08-2047 | 4.मं | 18-08-2047 >> 17-10-2047 |
| 5.रा | 17-10-2047 >> 20-03-2048 | 6.गु | 20-03-2048 >> 05-08-2048 |
| 7.श | 05-08-2048 >> 16-01-2049 | 8.बु | 16-01-2049 >> 12-06-2049 |
| 9.के | 12-06-2049 >> 11-08-2049 | | |

### दशा : बुध अपहार : सूर्य

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1.र | 11-08-2049 >> 27-08-2049 | 2.चं | 27-08-2049 >> 21-09-2049 |
| 3.मं | 21-09-2049 >> 10-10-2049 | 4.रा | 10-10-2049 >> 25-11-2049 |
| 5.गु | 25-11-2049 >> 05-01-2050 | 6.श | 05-01-2050 >> 24-02-2050 |
| 7.बु | 24-02-2050 >> 09-04-2050 | 8.के | 09-04-2050 >> 27-04-2050 |
| 9.शु | 27-04-2050 >> 17-06-2050 | | |

### दशा : बुध अपहार : चंद्र

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1.चं | 17-06-2050 >> 31-07-2050 | 2.मं | 31-07-2050 >> 30-08-2050 |
| 3.रा | 30-08-2050 >> 15-11-2050 | 4.गु | 15-11-2050 >> 23-01-2051 |
| 5.श | 23-01-2051 >> 15-04-2051 | 6.बु | 15-04-2051 >> 28-06-2051 |
| 7.के | 28-06-2051 >> 28-07-2051 | 8.शु | 28-07-2051 >> 22-10-2051 |
| 9.र | 22-10-2051 >> 17-11-2051 | | |

## ग्रहों के स्थिती का विश्लेषण

### भावों के स्वामी

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| प्रथम | भाव के स्वामी | (केन्द्र) | : | मंगल |
| दूसरा | ,, | (पनफर) | : | गुरू |
| तिसरा | ,, | (अपोक्लीम) | : | शनी |
| चौथा | ,, | (केन्द्र) | : | शनी |
| पांचवा | ,, | (त्रिकोण) | : | गुरू |
| छठ्ठा | ,, | (अपोक्लीम) | : | मंगल |
| सातवाँ | ,, | (केन्द्र) | : | शुक्र |
| आठवाँ | ,, | (पनफर) | : | बुध |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| नवम | ,, | (त्रिकोण) | : | चंद्र |
| दशम | ,, | (केन्द्र) | : | सूर्य |
| ग्यारहवां | ,, | (पनफर) | : | बुध |
| बारहवाँ | ,, | (अपोक्लीम) | : | शुक्र |

## ग्रहों का योग

| | | |
|---|---|---|
| चंद्र | ग्रहों की परस्पर दृष्टी | मंगल, राहु |
| सूर्य | ग्रहों की परस्पर दृष्टी | बुध, शुक्र |
| बुध | ग्रहों की परस्पर दृष्टी | सूर्य, शुक्र |
| शुक्र | ग्रहों की परस्पर दृष्टी | सूर्य, बुध |
| मंगल | ग्रहों की परस्पर दृष्टी | चंद्र, राहु |
| गुरू | ग्रहों की परस्पर दृष्टी | लग्न |

## ग्रहों की ग्रहों पर दुष्टि

| | | |
|---|---|---|
| चंद्र | दृष्टी | केतु |
| मंगल | दृष्टी | सूर्य, बुध, शुक्र, केतु |
| गुरू | दृष्टी | शनी, केतु |
| शनी | दृष्टी | गुरू, केतु, लग्न |

## ग्रहों की भावों पर दुष्टि

| | | |
|---|---|---|
| चंद्र | दृष्टी | नवम |
| सूर्य | दृष्टी | चौथा |
| बुध | दृष्टी | चौथा |
| शुक्र | दृष्टी | चौथा |
| मंगल | दृष्टी | छठा, नवम, दशम |
| गुरू | दृष्टी | पांचवा, सातवाँ, नवम |
| शनी | दृष्टी | प्रथम, चौथा, नवम |

## शुभ और अशुभ ग्रह

गुरू, शुक्र और चन्द्र नैसर्गिक पक्षबल के अनुसार शुभ फलदायी होते हैं। शुक्लपक्ष के शष्ठी तिथि से लेकर कृष्णपक्ष के शष्ठी तिथि तक चन्द्र को पक्षबल प्राप्त रहता है।

आपकी जन्मपत्रिका में चन्द्र पक्षबल से युक्त है और वह शुभ फलदायी भी है।

बुध जब क्रूर (अशुभ) ग्रहों के संयोग में आता है तो वह ओर भी अशुभ और उद्वेग उत्पन्न करने वाला ग्रह हो जाता है।

संक्षिप्त में यह कहा जा सकता है कि आपकी कुंडली में बुध अशुभ ग्रह के प्रभाव के कारण अशुभ फल दिलाता है।

| | |
|---|---|
| चंद्र | शुभ |
| सूर्य | अशुभ |
| बुध | अशुभ |
| शुक्र | शुभ |
| मंगल | अशुभ |
| गुरू | शुभ |
| शनी | अशुभ |
| राहु | अशुभ |
| केतु | अशुभ |

## अशुभ और शुभ फलों का ग्रहों के भाव अधिपत्य के आधार पर निरूपण

ग्रहों के शुभ-अशुभ फलों का निर्णय कुंडली में उनके नैसर्गिक गुणों के आधार पर किया जाता है पर फलादेश का मुख्य आधार उनका कुंडली के भावों के अधिपत्य के अनुसार होता है।

कुंडली में प्रथम स्थान, पांचवा स्थान और नवमाँ स्थान सदा शुभ माना जाता है। इन्हें त्रिकोण भी कहा जाता है।

नैसर्गिक अशुभ ग्रह भी यदि चौथे, सातवें और दसवें स्थान के स्वामीत्व को प्राप्त करता है, तब वह लाभदायी और मंगलकारी बनता है।

तीसरे, छठ्ठे और अग्यारवें स्थान के स्वामी अशुभ और अमंगलकारी माने जाते हैं।

साधारण दृष्टी से शुभ ग्रह चौथे, सातवें और दसवें स्थान के सेवामीत्व को प्राप्त करते है, तब वह अशुभकारी और अमंगलमयी बनते हैं। यह केन्द्राधीपती के दोष के कारण उत्पन्न होनेवाली स्थिती हैं।

दूसरे, आठवें और बारहवें, स्थान के स्वामी सम या शुभ-अशुभ दोनों ही प्रकार के फल देने वाले होते हैं।

सूर्य और चन्द्र के छोडकर अन्य सभी ग्रह, कुंडली में दो स्थानों के स्वामीत्व को प्राप्त करते हैं। उनके भावानुसार प्रभाव को सूक्ष्मता से देखना पड़ता है।

कुछ ज्यीतिषों का मानना है कि आठवें स्थान का स्वामी सदा अमंगल और अशुभ प्रभाव उत्पन्न करने वाला होता है। शास्त्रोक्त ग्रंन्थों से पता चलता है कि आठवे स्थान के स्वामी के विषय में फलादेश उसके कुंडली में अन्य स्थान को भी विचार में लेकर करना चाहिए।

| ग्रह | स्वामीत्व | स्वभाव |
|---|---|---|
| चंद्र | 9 | शुभ |
| सूर्य | 10 | शुभ |
| बुध | 8, 11 | अशुभ |
| शुक्र | 7, 12 | अशुभ |
| मंगल | 1, 6 | सम |
| गुरू | 2, 5 | शुभ |
| शनी | 3, 4 | सम |

### नैसर्गिक मित्रता कोष्टक

| | चं | र | बु | शु | मं | गु | श |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| चं | ... | मित्र | मित्र | सम | सम | सम | सम |
| र | मित्र | ... | सम | शत्रु | मित्र | मित्र | शत्रु |
| बु | शत्रु | मित्र | ... | मित्र | सम | सम | सम |
| शु | शत्रु | शत्रु | मित्र | ... | सम | सम | मित्र |
| मं | मित्र | मित्र | शत्रु | सम | ... | मित्र | सम |
| गु | मित्र | मित्र | शत्रु | शत्रु | मित्र | ... | सम |
| श | शत्रु | शत्रु | मित्र | मित्र | शत्रु | सम | ... |

## तात्कालिक मित्रता कोष्टक

| | चं | र | बु | शु | मं | गु | श |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| चं | ... | शत्रु | शत्रु | शत्रु | शत्रु | मित्र | शत्रु |
| र | शत्रु | ... | शत्रु | शत्रु | शत्रु | मित्र | मित्र |
| बु | शत्रु | शत्रु | ... | शत्रु | शत्रु | मित्र | मित्र |
| शु | शत्रु | शत्रु | शत्रु | ... | शत्रु | मित्र | मित्र |
| मं | शत्रु | शत्रु | शत्रु | शत्रु | ... | मित्र | शत्रु |
| गु | मित्र | मित्र | मित्र | मित्र | मित्र | ... | शत्रु |
| श | शत्रु | मित्र | मित्र | मित्र | शत्रु | शत्रु | ... |

## पंचदा मित्रता कोष्टक

| | चं | र | बु | शु | मं | गु | श |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| चं | ... | सम | सम | शत्रु | शत्रु | मित्र | शत्रु |
| र | सम | ... | शत्रु | अधि शत्रू | सम | अधि मित्र | सम |
| बु | अधि शत्रू | सम | ... | सम | शत्रु | मित्र | मित्र |
| शु | अधि शत्रू | अधि शत्रू | सम | ... | शत्रु | मित्र | अधि मित्र |
| मं | सम | सम | अधि शत्रू | शत्रु | ... | अधि मित्र | शत्रु |
| गु | अधि मित्र | अधि मित्र | सम | सम | अधि मित्र | ... | शत्रु |
| श | अधि शत्रू | सम | अधि मित्र | अधि मित्र | अधि शत्रू | शत्रु | ... |

## षष्टीयांश में के दृष्टीबल कोष्टक

**देखने वाला ग्रह** **दृष्य ग्रह**

| | चं | र | बु | शु | मं | गु | श |
|---|---|---|---|---|---|---|---|

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| **शुभ दृष्टी** | | | | | | | |
| चंद्र | . | 40.26 | 45.84 | 39.51 | . | 0.40 | 23.40 |
| शुक्र | 10.97 | . | . | . | 3.20 | 33.22 | 17.19 |
| गुरु | 15.81 | 9.86 | 15.44 | 9.11 | 28.38 | . | 56.30 |
| | | | 30.00 | | | | |
| **शुभ बल** | **26.78** | **50.12** | **91.28** | **48.62** | **31.58** | **33.62** | **96.89** |
| **अशुभ दृष्टी** | | | | | | | |
| सूर्य | -9.48 | . | . | . | -6.19 | -34.72 | -16.44 |
| बुध | -3.38 | . | . | . | -28.52 | -44.56 | -10.86 |
| मंगल | . | -46.55 | -52.13 | -45.80 | . | -6.69 | -32.99 |
| | | | | | | | -15.00 |
| शनी | -33.30 | -43.56 | -36.71 | -42.81 | -27.01 | -45.19 | . |
| | | | -45.00 | | | | |
| **अशुभ शक्ती** | **-46.16** | **-90.11** | **-133.84** | **-88.61** | **-61.72** | **-131.16** | **-75.29** |
| **दृष्टी पीड** | **-19.38** | **-39.99** | **-42.56** | **-39.99** | **-30.14** | **-97.54** | **21.60** |
| **द्रिक बल** | **-4.84** | **-10.00** | **-10.64** | **-10.00** | **-7.53** | **-24.38** | **5.40** |

## षड्बल

| | चं | र | बु | शु | मं | गु | श |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उच्च बल | | | | | | | |
| | 21.07 | 18.11 | 46.51 | 13.27 | 56.93 | 19.87 | 7.60 |
| सप्तवर्गीय बल | | | | | | | |
| | 71.25 | 142.50 | 93.75 | 78.76 | 76.88 | 108.75 | 105.01 |
| ओजयुग्म राशी बल | | | | | | | |
| | 15.00 | 30.00 | 15.00 | 15.00 | 15.00 | 15.00 | 15.00 |
| केन्द्र बल | | | | | | | |
| | 15.00 | 60.00 | 60.00 | 60.00 | 15.00 | 60.00 | 60.00 |
| द्रेश्काण बल | | | | | | | |
| | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 15.00 | 15.00 |
| संयुक्तस्थान बल | | | | | | | |
| | 122.32 | 250.61 | 215.26 | 167.03 | 163.81 | 218.62 | 202.61 |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| संयुक्त दिगबल | | | | | | | |
| | 48.42 | 58.42 | 27.86 | 2.08 | 7.39 | 58.15 | 59.38 |
| नतोन्नत बल | | | | | | | |
| | 0.71 | 59.29 | 60.00 | 59.29 | 0.71 | 59.29 | 0.71 |
| पक्षबल | | | | | | | |
| | 93.68 | 13.16 | 13.16 | 46.84 | 13.16 | 46.84 | 13.16 |
| त्रिभाग बल | | | | | | | |
| | 0 | 60.00 | 0 | 0 | 0 | 60.00 | 0 |
| अब्द बल | | | | | | | |
| | 0 | 15.00 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |
| मास बल | | | | | | | |
| | 0 | 0 | 30.00 | 0 | 0 | 0 | 0 |
| वार बल | | | | | | | |
| | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 45.00 | 0 |
| होरा बल | | | | | | | |
| | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 60.00 |
| आयन बल | | | | | | | |
| | 55.86 | 80.62 | 45.48 | 39.60 | 8.22 | 4.58 | 2.90 |
| युद्ध बल | | | | | | | |
| | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |
| संयुक्त काल बल | | | | | | | |
| | 150.25 | 228.07 | 148.64 | 145.73 | 22.09 | 215.71 | 76.77 |
| संयुक्त चेष्टाबल | | | | | | | |
| | 0 | 0 | 39.24 | 1.62 | 53.64 | 28.78 | 32.37 |
| संयुक्त नैसर्गिक बल | | | | | | | |
| | 51.43 | 60.00 | 25.70 | 42.85 | 17.14 | 34.28 | 8.57 |
| संयुक्त द्रिकबल | | | | | | | |
| | -4.84 | -10.00 | -10.64 | -10.00 | -7.53 | -24.38 | 5.40 |
| संपूर्ण षड्बल | | | | | | | |
| | 367.58 | 587.10 | 446.06 | 349.31 | 256.54 | 531.16 | 385.10 |

## षडबल संक्षिप्त सारिणी

| चं | र | बु | शु | मं | गु | श |
|---|---|---|---|---|---|---|
| संपूर्ण षड्बल | | | | | | |
| 367.58 | 587.10 | 446.06 | 349.31 | 256.54 | 531.16 | 385.10 |
| संपूर्ण शडबल | | | | | | |
| 6.13 | 9.79 | 7.43 | 5.82 | 4.28 | 8.85 | 6.42 |
| मौलीक आवश्यकता | | | | | | |
| 6.00 | 5.00 | 7.00 | 5.50 | 5.00 | 6.50 | 5.00 |
| षडबल अनुपात | | | | | | |
| 1.02 | 1.96 | 1.06 | 1.06 | 0.86 | 1.36 | 1.28 |
| संबन्धी स्थान | | | | | | |
| 6 | 1 | 4 | 5 | 7 | 2 | 3 |

## इष्टफल, कष्टफल कोष्टक

| चं | र | बु | शु | मं | गु | श |
|---|---|---|---|---|---|---|
| इष्टफल | | | | | | |
| 31.42 | 25.87 | 42.72 | 4.64 | 55.26 | 23.91 | 15.68 |
| कष्टफल | | | | | | |
| 22.63 | 31.07 | 16.73 | 52.23 | 4.42 | 35.40 | 38.05 |

## षष्टीयांश में के भाव दृष्टीबल कोष्टक

बुध ग्रह फल उसके साथ स्थित ग्रह के स्वभाव से सुनिश्चित किया जाता है।

**देखने वाला ग्रह  भावमध्य की अपेक्षा से गृहों का द्रष्यभाव**

| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| शुभ दृष्टी | | | | | | | | | | | |
| चंद्र | | | | | | | | | | | |
| . | . | . | 0.59 | 4.93 | 10.66 | 6.32 | 2.37 | 14.41 | 10.66 | 6.91 | 3.16 |
| शुक्र | | | | | | | | | | | |
| 9.69 | 8.28 | 1.56 | 11.89 | 12.03 | 8.28 | 4.53 | 0.78 | . | . | . | 2.97 |
| गुरू | | | | | | | | | | | |
| . | 2.77 | 20.55 | 42.23 | 24.45 | 11.10 | 57.23 | 42.23 | 27.23 | 12.23 | . | . |

| | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | 30.00 | | | | 30.00 | | | |
| **शुभ बल** | | | | | | | | | | | |
| **9.69** | **11.05** | **22.11** | **54.71** | **71.41** | **30.04** | **68.08** | **45.38** | **71.64** | **22.89** | **6.91** | **6.13** |
| **अशुभ दृष्टी** | | | | | | | | | | | |
| सूर्य | | | | | | | | | | | |
| -10.07 | -8.09 | -1.18 | -12.63 | -11.84 | -8.09 | -4.34 | -0.59 | . | . | . | -3.16 |
| बुध | | | | | | | | | | | |
| -41.78 | -23.57 | -12.86 | -56.78 | -41.78 | -26.78 | -11.78 | . | . | . | -3.22 | -21.43 |
| मंगल | | | | | | | | | | | |
| -0.98 | . | . | . | -2.77 | -9.29 | -8.48<br>-3.75 | -1.96 | -11.09 | -12.23 | -8.48<br>-3.75 | -4.73 |
| शनी | | | | | | | | | | | |
| -14.07 | -11.48 | -7.73 | -3.98 | -0.23<br>-11.25 | . | . | . | -3.52 | -10.79<br>-11.25 | -7.73 | -0.47 |
| **अशुभ शक्ती** | | | | | | | | | | | |
| **-66.90** | **-43.14** | **-21.77** | **-73.39** | **-67.87** | **-44.16** | **-28.35** | **-2.55** | **-14.61** | **-34.27** | **-23.18** | **-29.79** |
| **दृष्टी पींड / द्रिक बल** | | | | | | | | | | | |
| -57.21 | -32.09 | 0.34 | -18.68 | 3.54 | -14.12 | 39.73 | 42.83 | 57.03 | -11.38 | -16.27 | -23.66 |

## भावबल की तालिका

| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| भावाधीपती का बल | | | | | | | | | | | |
| 256.54 | 531.16 | 385.10 | 385.10 | 531.16 | 256.54 | 349.31 | 446.06 | 367.58 | 587.10 | 446.06 | 349.31 |
| भाव दिग्बल | | | | | | | | | | | |
| 0 | 50.00 | 10.00 | 30.00 | 50.00 | 20.00 | 30.00 | 10.00 | 10.00 | 60.00 | 40.00 | 50.00 |
| भावदृष्टीबल | | | | | | | | | | | |
| -57.21 | -32.09 | 0.34 | -18.68 | 3.54 | -14.12 | 39.73 | 42.83 | 57.03 | -11.38 | -16.27 | -23.66 |
| संपूर्ण भावबल | | | | | | | | | | | |
| 199.33 | 549.07 | 395.44 | 396.42 | 584.70 | 262.42 | 419.04 | 498.89 | 434.61 | 635.72 | 469.79 | 375.65 |
| भावबल के रूप | | | | | | | | | | | |
| 3.32 | 9.15 | 6.59 | 6.61 | 9.75 | 4.37 | 6.98 | 8.31 | 7.24 | 10.60 | 7.83 | 6.26 |
| संबन्धी स्थान | | | | | | | | | | | |

| | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 12 | 3 | 9 | 8 | 2 | 11 | 7 | 4 | 6 | 1 | 5 | 10 |

### अस्तंगत ग्रह स्थिती का विवरण।

जब कोई ग्रह सूर्य के निकट आता है तब वह अस्त हो जाता है। अस्त ग्रह अशुभ स्थिती उत्पन्न करता है। सूर्य से बारह अंश पर चन्द्र, सत्रह अंश पर मंगल, तेरह अंश पर बुध, ग्यारह अंश से गुरू, नौ अंश पर शुक्र और पंद्रह अंश पर शनी अस्तंगत माना जाता है।

बुध अस्तंगत है।

शुक्र अस्तंगत है।

### ग्रहयुद्ध

सूर्य और चन्द्र के सिवा अन्य ग्रह जब भी एक अंश से ज्यादा समीप आते हैं तो 'ग्रहयुद्ध' की स्थिती पैदा होती है। ग्रहयुद्ध में शुभाशुभ के बारे में अलग-अलग विचार धारायें हैं। उसकी एक झलक इस प्रकार है। अन्य ग्रहों के लिए : उत्तर दिशा की ओर रहे ग्रह विजयी होते हैं।

**इस जन्मकुंडली में कोई भी ग्रहयुद्ध नहीं है।**

### अवस्था, क्षीण, अस्त, युद्ध और वक्र स्थिती का संक्षिप्त विवरण।

| ग्रह | उच्च राशि में/ नीच राशि में | अन्स्तंगत | ग्रहयुद्ध | वक्री | बालादि अवस्था |
|---|---|---|---|---|---|
| चं | | | | | वृद्धावस्था |
| र | | | | | युवावस्था |
| बु | | सयहोग | | वक्री | बालावस्था |
| शु | | सयहोग | | | युवावस्था |
| मं | उच्च का | | | वक्री | कुमारावस्था |
| गु | | | | | मित्रावस्था |
| श | | | | | युवावस्था |

## कुंडली में ग्रहों की विशिष्ट युति योग

जन्म कुंडली में ग्रहों के मुख्य प्रकार के संयोजन से उत्पन्न होने वाली स्थिति को योग कहते हैं। योग व्यक्ति के जीवन प्रवाह और भविष्य को असर करने वाला होता हैं। कुछ योग ग्रहों के साधारण मिलने या संयोजन से उत्पन्न होते हैं, लेकिन विशेष दूसरे योग जो हैं वह ग्रहों के कुछ खास प्रकार के संयोजन अथवा जन्मकुंडली में स्थान ग्रहण करने से उत्पन्न होते हैं। इस प्रकार के सैकडों मिलन, संयोजन योग इत्यादी के विवरण पुरातन ज्योतिष शास्त्र के ग्रन्थों में दिये गये हैं। कुछ संयोजन से उत्पन्न होने वाले योग लाभदायी रहते हैं तो कुछ से हानि अथवा अशुभकारी फलों की प्राप्ति होती हैं।

आपकी जन्म पत्रिका में कुछ मुख्य महत्वपूर्ण ग्रहों से उत्पन्न होनेवाले योगों का विवरण यहां दिया गया हैं।

### राजयोग

लक्षण

- प्रथम और नवम भाव के अधिपति एक दूसरे से युति में है।
- चौथा और पांचवा भाव के अधिपति एक दूसरे की दृष्टि में है।
- इस जन्मकुण्डली में लाभदायक राजयोग दिखाई देती है।

कुंडली में वृहत राजयोग उदित है,

### वसुमतियोग

लक्षण

- गुरु, शुक्र और बुध लग्न या चन्द्र स्थान से उपचय में हो।

वसुमती योग मानव को धन और संपत्ति दिलाता है। जीवन ऐश्वर्यपूर्ण रहता है।

### अमलायोग

लक्षण

- लग्न या चन्द्र से दशवें स्थान में शुभ ग्रह हों।

आप अमला योग में जन्म हैं। आप दीर्घायु तथा धनी होंगे। अपनी पवित्रता के विचारों और कर्मों से समाज में आदर प्राप्त करेंगे। आप ऐश्वर्यमय जीवन व्यतीत करेंगे। आप को लोग निष्कलंक और चरित्रवान समझेंगे। किसी भी परिस्थिति में आपका मन चंचल न रहेगा। ऐश्वर्य, कीर्ति और मान-सम्मान का संगम इस योग में होता हैं। अतुलित कीर्ति प्राप्त होगी।

### शशीमंगल योग

लक्षण

- चन्द्र और मंगल एक ही भाव में।

आपकी जन्मपत्रिका में चन्द्र और कुज (मंगल) एक ही राशि में स्थित हैं। इससे शशिमंगल योग प्राप्त होता हैं। इस योग के कारण बचपन से अन्त तक धन की कमी का अनुभव नहीं होता। ज़रूरत पड़ने पर धन तो कहीं से भी आप के हाथों में आता रहेगा। जब आवश्यकता पड़ती हैं तो मिल जाता है। इस कारण आप भाग्यशाली व्यक्ति हैं।

### सदसन्चार योग

लक्षण

- लग्नाधीपती चर राशी में हो।

आप सदा सक्रिय और चलायमान हैं। आपके कार्य क्षेत्र में सफर ज़्यादा रहेगा। आप अपने निर्धारित लक्ष्य को सदा ध्यान में रखें ताकि आप कहीं भटक न जायें।

### मातृमूलाधान योग

लक्षण

- दूसरे स्थान का स्वामी चतुर्थस्थान के स्वामी के साथ हो।

आपको मातृकृपा के कारण धन संपन्न होगा।

### केंद्र योग

लक्षण

- सभी ग्रह कोई चार राशियाँ अधिग्रहित करते हैं।

यह खेती करने और कृषि के लिए एक बहुत अच्छा योग है। आप एक ऐसे पुरूष के रूप में जाने जाएँगे जो प्रकृति को पसंद करते है। आप खेती करने में भी रुचि प्राप्त करेंगे। यह कृषि से अतिरिक्त आय अर्जित करने में आपकी सहायता करेगे। आप खेतों और मैदानों की भी स्वामी हो सकते हैं।

### स्ववीर्यधन योग

लक्षण

- लग्न भगवान द्वारा अधिग्रहित नवामसा भगवान को धारण करने वाली राशि का भगवान, मजबूत है और द्वितीय भागवान से एक केंद्र अथवा त्रिकोण से

जुड़ता है।

यह योग आपके लिए स्वयं के प्रयास से पैसा अर्जित करने का एक संकेत है। आप पैसे अर्जित करने के लिए कई अवसर प्राप्त करेंगे। आप को कई तरीके से भी पैसे अर्जित करना संभव है। कुल मिलाकर, यह योग आपको आर्थिक रूप से स्वतंत्र होने के लिए सहायता करता है। आपको एक धनी पुरूष के रूप में जाना जाएगा।

### भ्रत्रुवृद्धि योग

लक्षण

- मजबूत मंगल जुड़ा और लाभों द्वारा स्वीकार किया जाता है।

आपके पास प्रभावशाली भाई होंगे। यह योग प्रदर्शित कर रहा है कि एक पुरूष के रूप में आप अपने पुरुष भाई से पर्याप्त समर्थन प्राप्त करेंगे। यह योग धनी भाइयों को और उनका श्रेष्ठ समर्थन प्राप्त करने के लिए एक संकेत है।

### बंधु पूज्य योग

लक्षण

- चौथा भगवान बृहस्पति का संगठन अथवा पक्ष रखता है।

आपको एक आदरणीय पुरूष माना जाएगा। यह योग परिवार में महान सम्मान प्रदर्शित कर रहा है। आपके दोस्त और रिश्तेदार आप से जानकारी लेने के लिए आएँगे। वे आपको एक बहुत जानकार व्यक्ति के रूप में मानेंगे।

### वाहन योग

लक्षण

- लग्न का भगवान चौथे, ग्यारहवें अथवा नौवें भगवान से जुड़ता है।

यह भौतिक सुविधाओं और विलासिता की वस्तुओं के लिए एक महान योग है। आप सभी सुविधाओं को प्राप्त करेंगे और यह आपको एक खुश पुरूष बनाएगा।

### सुपुत्र योग

लक्षण

- बृहस्पति पाँचवें घर का भगवान है और सूर्य उन्नति, मित्र अथवा स्वयं की राशि को अधिग्रहित करता है।

हर पुरूष की इच्छा होती है कि उसके श्रेष्ठ बच्चे हों। यह योग एक श्रेष्ठ पुत्र प्राप्त करने की संभावना प्रदर्शित करता है। आपका पुत्र अपने जीवन में मूल्य जोड़ेगा।

### सत्कालत्र योग

लक्षण

- सातवें का भगवान अथवा शुक्र जुड़ते हैं अथवा बृहस्पति या बुध द्वारा स्वीकार किए जाते हैं।

यह योग प्रदर्शित करता है कि आप एक खुश पुरूष होंगे और आप एक अच्छी पत्नि प्राप्त करेंगे। आपका पति सच्चा एवं पवित्र होगा तथा यह आपके जीवन में मूल्य जोड़ेगा।

### पारिजात योगा

लक्षण

- जहाँ स्थानस्वामी पर सत्तास्वामी का अधिकार है, वहाँ राशीस्वामी चतुर्थक कों मिलता है।

आपके विवाहस्वामी स्थानानुसार, राजयोग का प्रकार पारिजात योग आपके कुंडली में है। यह योग आपको सुखी और समाधानी जीवन देता है, खास कर जीवन के उत्तरवर्ती भाग में, आपको वास्तव में बहोत मेहनत करनी पड सकती है। तरक्की धिमे धिमे रहेगी। आप नियम संभालते है और उनसे नजदिकी सें संबंधित है। आपको बहोत मेहनत करनी पडे फिर भी शिक्षा आपका मजबुत आधार बन सकती है। आपको सभी सुविधा प्राप्त होगी और आप परंपरा और

कर्मकांड इनके चाहते रहेंगे।

### बुधीमाधुर्य योगा

लक्षण

- पंचम स्वामी शुभ है और उसका वृषभ, मिथुन, सिंह, वृश्चिक, मकर, कुंभ और मीन इन शुभ राशीयों पर प्रभाव है।

पांचवे स्वामीने तैय्यार किया हुआ यह बडा शुभ योग है, और पांचवा स्वामी बुद्धी और होशियारी दिखाता है। यह स्थान आपकों बडी बुद्धी और पुण्य देता है। यह पुण्य स्वभाव आपकों जीवन में बडा भाग्य देगा। उसके नाम जैसे ही आपके बुद्धी के माध्यम सें आपकों मिठे अनुभव मिलेंगे। आपकी बुद्धी आपकों उत्तम बुद्धी और ज्ञान देगी। दुसरों सें प्रशंसा प्राप्त हो सकती है।

### थिव्राबुधी योगा

लक्षण

- पंचम स्वामी शुभ ग्रह होना चाहिए और नवमांश स्वामी जिसमें पंचम स्थान स्वामी रखा है, वह शुभ ग्रहो कें संयोग में होना चाहिए।

यह महान योग नवांश स्वामी सें तैय्यार हुआ है, जो बहोत बुद्धी दिखाता है। आपके पास बहोत बुद्धी हो सकती है जिस कारन आप राजनीतिज्ञ, लेखक या सफलता प्राप्त वकील बन सकते है। इस योग कें माध्यम से आप बडा भाग्य का अनुभव लेने सक्षम रहेंगे। आपका कुंडली स्थान आपके जीवन में बडी चिजें प्राप्त करने की कुशाग्र बुद्धी आपकें पास है यह दिखाता है।

### द्विग्रह योग

लक्षण

- दो ग्रह एक ही भाव में स्थीत है।
- चंद्र,मंगल, तिसरा भाव में है।

आपकी बड़ो की राय का अनादर करने की प्रवृत्ति होगी। रक्त सम्बंधित बीमारियों के लिए सही समय पर वैद्य चिकित्सा लेनी चाहिए। सम्पत्ति और धैर्य सही समय पर आपका साथ देंगे। दूसरों की ओर ध्यान देने और समझने की प्रकृति से आपको साथ काम करने वाले और रिश्तेदारों का अभिनन्दन और प्यार प्राप्त होगा।

### त्रिग्रह योग

लक्षण

- तीन ग्रह एक ही भाव में स्थीत है।
- सूर्य,बुध,शुक्र, दशम भाव में है।

अन्य लोग बिना किसी कारण के आपका परिहास करेंगे। यथाक्रम शिक्षा आपके कमियों को दूर करने में सहायक होगी। पारिवारिक जीवन में आपको अप्रत्यशित मुसीबतों का सामना करना पड़ेगा। अपने वाक् शक्ति और यात्रा की अभिरुचि को बढ़ाकर उसे स्वयं के लिए लाभदायक बनाए।

## भाव फल

आपके जीवन और व्यवहार पर गृहों के प्रभाव की यह विज्ञापन समीक्षा करता है। इस विज्ञापन में उल्लेखित आवृत्ति और विरोध आपके जीवन पर गृहों के परस्पर प्रभाव को सूचित करते हैं ।

### व्यक्तित्व, शारीरीक बनावट, सामाजिक स्थिति

जन्मकुण्डली का पहला भाव एक व्यक्ति के व्यक्तित्व, शारीरिक बनावट, सामजिक स्थिति और प्रसिद्धि को सूचित करता हैं। यह लग्न कहलाता है।

आपका जन्मलग्न वृश्चिक है। बार बार ज्वर इत्यादि रोग हो सकते हैं। स्वभाव से क्रोधी हैं। उच्च अफसरों से या परिवार में बड़ों से सम्मान और ख़िताब प्राप्त होंगे। शास्त्रों में अभिरुचि रखने वाले व्यक्ति हैं। अपने विरोधियों पर विजय प्राप्त करने में पूरी कमर कसने वाले हैं। हर कार्य में अपनापन उमड़ आयेगा। धार्मिक क्रियाकाण्ड में अभिरुचि रखनेवाले व्यक्ति हैं। मकर तीसरे स्थान में रहने से आप में समाधान और पाण्डित्य की प्रबलता रहेगी। पुत्र पौत्रादियों से संतोष प्राप्त होगा। प्रतिपक्ष के लोगों से सम्मान प्राप्त होगा। आप शाकाहारी बनना पसंद करते हैं। जीवनसाथी के गुणगान गाने के आदि हैं।

आपका जीवन संतुष्ट और शाँतिपूर्ण बीतेगा। आप मधुरभाषी स्वभाव के हैं। 24वें, 25वें वर्ष में भाग्योन्नति होने का अवसर प्राप्त हो सकता है।

आप सुशील हैं और स्पष्ट विचारवाले हैं। स्वास्थ्य के प्रति सतर्क रहना आवश्यक होगा। सदाचारी संतान की प्राप्ति होगी। आपका जीवन साथी सौन्दर्य से, शाँत स्वभाव से और विनय से आभूषित होगा। परस्पर समर्पणभाव के कारण जीवन में आपस में सहयोग और सहारा प्राप्त होगा। हर कार्य में मन एकाग्र करना आपके लिए सरल होगा। आठवें स्थान पर मिथुनराशि की उपस्थिति के कारण मादक पदार्थों से (शराब इत्यादि) दूर रहना अनिवार्य है। मधुमेह, पाईल्स और कोई भी गुप्तरोग के चिन्ह दिखाई देते ही ज़्यादा विलंब किए बिना डाक्टरी सलाह प्राप्त करना लाभदायी होगा। पूजापाठ और अन्य धार्मिक कार्यों में रुचि होगी। वस्तुत: वृश्चिक के जातक-पराक्रमी, शूर, चतुर, स्वार्थी, वाद-विवादी, हठी, झगडालू, दम्भी, ज्ञानी और धनवान होते हैं। ये सब गुण-अवगुण न्यूनाधिक मात्रा में आप में स्पष्ट रूप से देखे जा सकते हैं।

आप तरंगों की और कल्पनाओं की दुनिया में विचरने वाले व्यक्ति हैं। आप अनेक भावनाओं से भरे हुए हैं और साथ ही भावुक स्वभाव के हैं। कल्पनाओं की दुनिया में रहते रहते उसके माध्यम से आनंद जुटाने की आदत सी हो गई है। व्यवहारिक जीवन में निपुणता का अभाव है। चिंतन कार्य में ज़्यादा समय बिताने वाले व्यक्ति हैं। 'कोई जल्दी नहीं है' इस सोच के साथ जीवन बिताने वाले व्यक्ति हैं। विपरीत स्थिति में आप अपने को संभाल लेते हैं। जीवन का 25,32,41,49,57 और 63वाँ वर्ष आपके लिए महत्वपूर्ण रहेगा। आप आलस्य का त्याग करें, अच्छा होगा।

लग्नाधिपति तीसरे स्थान पर है। महान पुरुषों जैसी वीरता और धैर्य आप में प्रगट होंगे। अपार बुद्धिशक्ति और संपत्ति दोनों के आप मालिक हैं। समूह के बीच मान्यता प्राप्त होगी। असामान्य सुख के उपभोग की इच्छा प्रगट होगी। संगीत और गणित शास्त्र में नैपुण्यता प्राप्त होगी। आप स्वपराक्रम से यशस्वी होंगे। बन्धु मित्रों से सहयोग मिलेगा। धन, धान्य तथा सब प्रकार के सुख सदा प्राप्त होते रहेंगे। द्विभार्य योग घटित हो सकता है।

गुरु प्रथम स्थान पर रहने से सौन्दर्यपूर्ण शरीर प्राप्त होगा। विज्ञान में अति अभिरुचि प्राप्त होगी। आप निर्भय और व्यवहार से विनम्र हैं। दीर्घायुषी होने का भाग्य प्राप्त है।

क्योंकि लग्नेश उच्च स्थान पर है आप उंचे अधिकार पद को अपना सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टी है, और यह अच्छी सूचना नहीं हैं। दूषित वातवरण और संदेह युक्त दोस्तो से दूर रहना चाहिए।

## धन, भूमि और संम्पति

भूमि, संपत्ति, धन, परिवार, बोली, भोजन आदि कुछ महत्वपूर्ण चीजे हैं जो दूसरे भाव द्वारा सूचित की जाती है। इसे धन स्थान कहते हैं।

दूसरे भाव का स्वामी लग्न स्थान पर रहने से अनेक संजोगों का सामना करना पड़ेगा, उस समय कठोर हृदय से व्यवहार करना होगा। आर्थिक क्षेत्र में प्रगति के साथ क्षीण स्थिति का अनुभव होता रहेगा। अच्छी और बुरी दोनों स्थितियों के मिश्रण युक्त फल का अनुभव होगा। परिवार के अंग के साथ स्थायी अच्छे संबंध जारी रखना कठिन होगा। आप स्वार्थ की अपेक्षा परमार्थ को महत्व देंगे। विपरीत योनि से धनिष्ठ संबंध बनाना सरल होगा।

क्योंकि दूसरे स्थान का स्वामी पर चौथे भाव के स्वामी की दृष्टी है, आप मातृक संबंधो से धन और संपत्ति पा सकते हैं।

## भाई / बहन

जन्मकुण्डली का तीसरा स्थान, आपके भाई - बहन, धैर्य और बुद्धि को सूचित करता हैं।

तीसरा भावाधिपति सातवें स्थान पर होने से बालावस्था में अनेक समस्याओं का सामना करना होगा। जीवन के उत्तरार्धकाल में समस्याओं से मुक्ति प्राप्त होगी। स्वतंत्र व्यापार आप के लिए लाभदायक नहीं है। आप श्रेष्ठ अफसरों या बडों के मार्गदर्शन का लाभ उठाकर प्रगति कर सकते हैं। उच्च अधिकारियों के आधीन रहकर काम करना अच्छा होगा। आप की सेवा के कारण उनसे प्रीति प्राप्त होगी। किसी चीज़ के नष्ट होने या खो जाने का आरोप आप पर लगाया जा सकता है। सरकार या न्यायालय का निर्णय आपको कष्टदायी हो सकता है। धन का अनुचित मार्ग से संग्रह करना महंगा पड़ सकता है। किसीसे अधिक निकटता और गहरी मित्रता बदनामी के अतिरिक्त कुछ और न दे पायेगी।

चन्द्र तीसरे स्थान पर रहा है और इस कारण आपकी श्रेष्ठ आर्थिक स्थिति बनी रहेगी। साथ ही आप विनम्र स्वभाव के हैं। भाई और बहन के बीच आप स्वार्थी स्वभाव के हैं ऐसी गलतफहमी उत्पन्न होगी। सुखी वैवाहिक जीवन के लिए आपको पुरुषार्थ करना पड़ेगा।

मंगल (कुज) तीसरे स्थान पर रहने से आप संपत्ति के मालिक और कार्यदक्षता के स्वामी बनेंगे। व्यवहार से सरल और अन्य लोगों को आकर्षित करनेवाला व्यक्तित्व प्राप्त होगा। आप अपने भाई बहन के विरुद्ध कार्य कर रहे हैं ऐसा भ्रम उन लोगों में उत्पन्न होगा। वैवाहिक जीवन को सुखद और संतुष्ट बनाने केलिए अति प्रयास करना पड़ेगा।

तीसरे स्थान पर राहु के होने से स्पष्ट श्रेष्ठ चिंतन कार्य और सशक्त मन के मालिक हैं। अन्य को समझने में और सन्मानित करने की कला में निपुण हैं। यह

सब होते हुए भी भाई और बहनों के साथ क्लेश युक्त संबन्ध रहने की संभावना है। आपकी आयु दीर्घ रहेगी।

## संपत्ति, विद्या इत्यादि के विषय में।

चतुर्थ भाव, चतुर्थेश कारक और संबंधित ग्रहों की योग, युतिदृष्टि के माध्यम से संपत्ति विद्या-बुद्धि, माता, भूमि , भवन और वाहन आदि का सूचक है। इस पत्रिका में इस विषय का विवरण निम्नांकित है।

आपकी जन्मपत्रिका में चौथे भाव का स्वामी सातवें भाव में स्थित हैं। सामान्यत: आप सुखी होंगे। ज़मीन और बड़े मकान आपकी अधीन होंगे। अभ्यास और अन्य कार्यों के संपूर्ण विजयी बनने में अति कठिन प्रयास करनेवाले हैं। इसकारण सफलता आपका साथ सदा देगी। 'सभायां मूकवद्भवेत्' अर्थात जन सभाओं को संबोधित करने में कठिनाई अनुभव होगी।

चौथे भाव का स्वामी शनि है। नेता पद और राजकाज के निपुणता का योग है। आप परिवार का कारोबार अति निपुणता से चलाने के योग्य हैं। विद्यालय में और खेल कूद के मैदान में अपने साथियों को श्रेष्ठ नेतृत्व प्रदान कर सकते हैं। यह कला, आप में बालावस्था से ही प्रकट हो उठेगी। लोक समर्थन जुटा पाना कठिन न होगा।

चन्द्र दुष्ट ग्रहों से प्रभावित है। इस कारण मातृ सुख और मानसिक स्वस्थता के लिए आपको प्रयास करना होगा।

अन्य ग्रहों के प्रभाव के कारण मंगल कमज़ोरी महसूस कर रहा है। किसी भी अमूल्य वस्तु की खरीदी करते वक्त सावधान रहना लाभदायक होगा। अन्यथा हानि से बच पाना संभव नहीं होगा।

मंगल ने उच्च स्थान ग्रहण किया है। इस कारण किसी अशुभ ग्रह की दृष्टि हो तो भी अमूल्य वस्तु की खरीदी में घबराने की ज़रूरत नहीं। मंगल के प्रभाव से अशुभ ग्रहों के आसुरी प्रभाव में क्षीणता का अनुभव किया जायेगा।

भावाधिपति, बृहस्पति का स्थान अनुकूल रहने से अशुभ ग्रहों केकुप्रभाव में क्षीणता का अनुभव होगा। अन्य चतुर्थ भाव से संबंधित कार्यों में सफलता प्राप्त करना सरल होगा।

## बच्चे, बुद्धि, प्रतिभा

जन्मकुण्डली में उपस्थित पाँचवी भाव संतान, शिक्षा, मन और बुद्धि को सूचित करता है।

पाँचवां भावाधिपति लग्न स्थान पर रहने से आप विज्ञान संपन्न व्यक्ति बन पायेंगे। धन का व्यय नहीं होगा और खर्च की मात्रा आपके नियंत्रण के आधीन रहेगी। अन्य लोगों की संपत्ति आपके हाथ में आने की संभावना है। आप वक्र बुद्धि के हैं, ऐसा आरोप सहना होगा। संतान विषय में कुछ प्रतिकूल फलों की प्राप्ति हो सकती है।

लग्न से पाँचवे भाव में शुभ ग्रहों की उपस्थिति चन्द्र, गुरु था शुभ ग्रह जो इस भाव को देख रहे हों, अर्थात इन ग्रहों की इस स्थान पर दृष्टि हो तो यह संतति सुख, विद्या आदि विषयों से संबंधित अच्छे फल मिलते हैं।

## रोग, शत्रु , कठिनाइयाँ

छठा भाव रोग, शत्रु और बाधाओं और कठिनाइयों का द्योतक है।

छठ्ठा भावाधिपति के तीसरे स्थान पर रहने से आप गरम मिज़ाज के व्यक्ति बनेंगे। इस कारण स्वजनों से शत्रुता उत्पन्न होगी। सहयोगियों से मिलनेवाले सहयोग में कमी अनुभव होगी। मनोबल टूटने न पाये, इसका ध्यान रहें। अधीनस्थ कर्मचारियों या अपनों से छोटों के साथ व्यवहार करते समय, अपने पद की गरिमा को न भूलें।

छटवें स्थान का स्वामी मंगल ग्रह के साथ स्थित है। आपको चोरी डकैती द्वारा धन हानि का भय बना रहेगा।

## वैवाहिक जीवन और सातवें स्थान की ग्रहदशा।

वैवाहिक जीवन से जुड़े हुए गुणदोष का निर्णय, सातवें स्थान, सप्तमेश, सप्तमकारक और अन्य ग्रहों की युति-दृष्टि के आधार पर किया जाता है।

सातवाँ भावाधिपति दसवें स्थान पर है। आपका कार्यक्षेत्र निवास स्थान से दूर रहेगा। बार-बार लंबी यात्रा का योग है। आप अपनी पत्नी को इस कारण अधिक समय न दे पायेंगे। इस कारण पत्नी का मन उद्वेग से भरा रहेगा। मानसिक तनाव सतायेगा। स्नेहपूर्ण और समर्पण मनोभाव से आप अपनी पत्नी को चाहते हैं। आप शुद्ध और विशाल हृदय के हैं। अपने मन की स्थिति को सहधर्मिणी को समझाने में थोड़ा परिश्रम करना पड़ेगा। विवेकपूर्ण और चतुराई से कार्य निपटाने

में कभी-कभी आप असफल होते हैं। इस कारण आपको पत्नी से मिलनेवाले सहयोग और सहायता से वंचित रहना पड़ता है। इस कारण सतर्कता और चतुराई से कार्य निपटाना आपके लिए अनिवार्य है। तीर्थस्थान यात्रा के दोनों (पति-पत्नी) इच्छुक हैं। कर्मजीविका में पत्नी का सहयोग मिल सकता है।

सातवें स्थान का मालिक पापयुक्त ग्रहों से प्रभावित है। इस कारण जीवन संगिनी अत्याग्रही (कठोर स्वभाव की) रहेगी। अनेक विषयों में उसकी यह आदत आपके लिए असह्य बन जाएगी। जिद्दी स्वभाव को नियंत्रित करने से प्रयत्नों से अनेक प्रकार की प्रगति होना संभव है।

पूर्व दिशा से सुयोग्य जीवन संगिनी प्राप्त होने की अधिक संभावना है।

आपकी पत्नी गेहुएं वर्णकी, ऊँचे कद की सौन्दर्यवती युवती होगी।

शनि सातवें स्थान पर है। विवाह में विलंब और कुछ मुश्किलों का सामना करना पड़ेगा। विवाह के बाद पति पत्नी एक दूसरे के अधीन रहेंगे। जीवनसाथी के हाव-भाव, रूप-रंग, आकृति-प्रकृति इत्यादि की कल्पना मन में है जो आप किसी के सामने व्यक्त नहीं करते। आपका विवाह संजोगाधीन हुआ है। आप एक परिश्रमशील कार्यकुशल पुरुष है। आपका निवास स्थान दूर देश में होना संभव है। सुदृढ वैवाहिक जीवन प्राप्त होगा। राष्ट्रीय कार्यों में सफलता मिल सकती है। अनेक सम्मानपूर्ण पद की उपलब्धी दिखाई देती है। सिरदर्द से सावधान रहना आवश्यक है। शिरोरोग के लक्षण प्रकट होते ही डाक्टरी सलाह-सूचना प्राप्त करना आपके लिए अनिवार्य है। विवाह की बात एक से अधिक स्थानों पर होना संभव होगा। जीवन साथी में गांभीर्य व प्रौढता होगी।

शुक्र पापगृहों से प्रभावित है। इस कारण पत्नी के साथ छोटे-मोटे कारणों को लेकर झगड़ा होता रहेगा। इस झगड़े को बड़ा स्वरूप न देना ही बुद्धिमानी माना जायेगा। किसी से परंपरागत संबंधों से भिन्न प्रकार के संबन्ध होने की सभावना होगी। पत्नी के स्वास्थ्य की ओर विशेष ध्यान रखने की आवश्यकता है।

सातवें स्थान पर गुरु की दृष्टि होने के कारण अनेक दोषपूर्ण फलों में कमी होगी। अनेक लाभ भी होंगे।

## दीर्घायु , कठिनाईयां

आठवें भाव से दीर्घायु, वैघक चिकित्सा, मृत्यु, और अन्य कठिनाइयों का अध्ययन किया जाता है।

आठवाँ भावाधिपति दसवें स्थान पर रहने से माता पिता से मिलनेवाले सुख में न्यूनता का अनुभव होगा। अनेक अपवादों का सामना करना पड़ेगा। व्यावसायिक सफलता के लिए अधिक कर्मठता की आवश्यकता है। सर्वोच्च सम्मान से वंचित रह सकते हैं।

## भाग्योदय, अनुभूतियाँ और पैत्रिक उपलब्धियों का विवरण।

नववा भावाधिपति तीसरे स्थान पर है। साहित्य कार्य से या वक्तृत्व कला के माध्यम से या अन्य किसी कलात्मक प्रक्रिया से किसी संस्था से धनार्जन होने की संभावना है। आप उपरोक्त कला में सफलता प्राप्त करने वाले पुरुष हैं। भाई बहन से सहयोग सुलभता से प्राप्त होगा। 'सहजगते सकृतपतौ रूप स्त्रीबंधु वत्सल: पुरुष:'

आपके नौवे भाव में केतु स्थित है। इसलिए आप आडंबर-प्रिय होंगे। आपके स्वभाव में अधिकार और अहंकार का भाव रहेगा। दूसरों से शत्रु भाव भी रहेगा। यह होते हुए भी बडों के प्रति आदर भाव बना रहेगा। कार्यों को सुलझाने की शक्ति में बढावा होगा। पर आपको एक चतुर जीवनसाथी की आवश्यकता होगी। अन्य लोगों से जीवन में सुख और समृद्धि प्राप्त होगी। 'शिखी धर्मग: क्लेशनाशं करोति सुतार्थी.....' संतान से सुख मिलेगा।

नवमें भाव में स्थान ग्रहण किया हुआ बृहस्पति सुख संपत्ति की प्राप्ती करानेवाला है। अनेक अनिष्ट कारक फलों से मुक्त रखने वाला है।

## पेशा

फलदीपिका के श्लोको के अनुसार दसवां भाव व्यापार, श्रेणी या पद, कर्म, जय - विजय, कीर्ति, त्याग, जीविका, आकाश, स्वभाव, गुण, अभिलाषा, चाल या गति और अधिकार को सूचित करता है।

सर्वार्थ चिंतामणि के अनुसार ज्योतिषियों को दसवें भाव से काम (उद्योग ) अधिकार, शक्ति, कीर्ति, वर्षा, विदेशों में जीवन, त्याग का मनोभाव, सम्मान, आदर, जीविका, व्यवसाय या पेशा आदि का निर्णय करना चाहिए। आपके लिए सूचित किए गए ज्योतिष संबंधित व्यवसाय के अन्तर्गत दसवें भाव, उसमें उपस्थित अधिपति, ग्रह, सूर्य और चन्द्र का स्थान आदि तत्वों के विश्लेषण के आधार पर विवेचन प्रस्तुत किया गया है।

आपकी जन्मकुण्डली में दसवें भाव का स्वामी दसवें भाव में है। बृहत पराशर होरा के श्लोकों के अनुसार कि आप जो भी काम करेंगे उसमें निपुण होंगे। आप धैर्यपूर्वक मुसीबतों का सामना करके किसी भी प्रतिकूल परिस्थिति में खुश रहते हैं। आप सत्य प्रिय हैं। आप अपने बुजुर्गों की सुख सुविधाओं के बारे में हमेशा चिन्ता करते हैं।

दसवें भाव में सिंह राशी है, यह राशीचक्र की पाँचवी राशि है और मनोरंजन को सूचित करती है, यह आभिनय, कला, मनोरजंन के स्थल,नाट्यग्रह, खेलने

का मैदान आदि की परिचायक है, सिंह राशी का सरकारी उद्योग,पुदीना,औषधि, शेयर बाजार, बहुमूल्य धातुओं का खनन, जंगल, किला आदि पर स्वामित्व है।

आप इनमें से किसी एक को अपना उद्योग क्षेत्र बना सकते हैं। आधुनिक युग में रात्रि मनोरंजन केंद्र, निशा-घर, क्लब (पार्टी जहां युवक युवतियां संगीत के पर नृत्य करते है) मेला, व्यापार मेला, होटल और पर्यटन आदि भी आपके लिए उचित होगा।

आपकी जन्मकुंडली में सूर्य दसवें भाव में उपस्थित हैं।

सारावली के अनुसार सूर्य दसवें भाव में स्थित हैं। आप बुद्विमान होंगे, सुख भोगों का अनुभव करेंगे और वाहन सुख सुलभ होगा। आप सामर्थ्यवान, धनिक और धैर्यशाली होंगे। आप अपने पुत्र और रिश्तेदारों से खुश रहेंगे। यह निश्चय है कि आप जीवन में आगे बढकर एक आदरणीय और महत्वपूर्ण पद को संभालेंगे। आप अपने पिताजी से लाभ पा सकते हैं। आपकी विविध विषयों में दिलचस्पी होगी।

क्योंकि सूर्य सिंह राशि में है, आप व्यापार चलाना पसंद करते हैं या किसी भी हालत में स्वामित्व चाहते हैं।

बुध ग्रह दसवें भाव में है और अपने स्वभाव के अनुरूप विद्या, बुद्धि, ज्ञान, और कौशल्य के आधारभूत विषयों से संबंधित कार्य क्षेत्रों में महत्वपूर्ण पद पर प्रतिष्ठित हो सकते हैं। अपने कार्यक्षेत्र में आने वाली कठिनाइयों का अपनी नियोजन क्षमता के जरिए धैर्यपूर्वक सामना करें। बुध ग्रह मन की रसिकता और भावना को नियंत्रित करता है। कला विज्ञापन,पत्रिका प्रकाशन आदि उद्योग क्षेत्र आपके लिए उचित है।

दशम भाव स्थित बुध ग्रह आप को कुशाग्र, बुद्धिमान, और कुशल बनाता है। जिनसे जातक श्रेष्ठ उद्योगों में धैर्य पूर्वक गंभीरता से कार्य करके अनेक सफलताएँ अर्जित हारते हुए; पुरस्कार, प्रशंसा पत्र, और अंलकार (गहने, वस्त्र आदि) प्राप्त करता है। आप व्यापार-व्यवसाय, मध्यस्थ, प्रतिनिधि, वाणिज्य व्यवसाय संस्थापन आदि में काम कर सकते हैं। बुध ग्रह साहित्य और शास्त्रों में रूचि उत्पन्न करता है जो शास्त्रीय सूझबूझ और हिसाब-किताब की ओर रूझान प्रकट करते हैं। यह आपको शास्त्र, हिसाव किताब, गणितशास्त्र और कानून के क्षेत्रों में सफलता दिलाता है।

बुध सिंह राशि में है। यह श्रेष्ठ ग्रह योग आपको सरकारी उद्योग में सफल बना सकता है। आपकी सहनशीलता, दृढंसकल्प और स्वाभिमान आपको किसी सरकारी या सार्वजनिक कार्यालय में अफसर बनाएगा।

आपकी जन्मकुंडली में शुक्र ग्रह दसवें भाव में उपस्थित है।

क्योंकि शुक्र दसवें भाव में उपस्थित है आप भाग्यशाली होंगे। आपका सौम्य स्वभाव और शालीन व्यवहार होगा। आपकी स्नान, पूजा, अर्चना,ध्यान धारणा जैसी अच्छी आदतें परिपक्व व्यक्तित्व प्रदान करेंगी। आपको अपने जीवन साथी और संतति से अतीव स्नेह प्राप्त होगा। आप किसी सांस्कारिक या कलात्मक संस्था के कर्मचारी बनेंगे। आपकी जीविका भी इसी तरह के कार्यों से संबंधित होगी। आप कला और कौशल्य के वाणिज्य पक्ष के समालोचन में निपुण होंगे और आप पर्यटन विभाग में काम करेंगे या प्राचीन कला से संबंधित होंगे। आप ऐसी चीजों को निर्यात भी कर सकते हैं। शुक्र एक स्त्री ग्रह है यह आपको नारी जाती की ओर से हर संभव सहायता देगा। जो एक शालीन पुरूष की सफलता का आधार होता है। अमूल्य रत्नो, गहने और वाहनो को शुक्र नियंत्रित करता है आप इन चीजों से संबंधित क्षेत्रों में सफल हो सकते हैं। शुक्र नियम और न्याय का अधिपति है जो आपके लिए संबंधित क्षेत्र में आर्थिक लाभ के अवसर उत्पन्न कर सकता है। आप कर नीरीक्षक भी बन सकते हैं।

शुक्र सिंह की राशि में स्थित हैं। बच्चों और स्त्रियों के वस्त्र, ऊनी कपड़े आदि आपके लिए व्यापार की चीज हैं।

जन्मकुण्डली में उपस्थित ग्रहों के स्थानों के आधार पर प्रस्तुत किए गए विश्लेषण के अलावा कुछ अन्य नतीजे भी जन्म नक्षत्र से प्राप्त कर सकते हैं। आपके जन्म नक्षत्र से सम्बधित उद्योग क्षेत्र निम्नलिखित है।

पुरातत्व विज्ञान, कीर्तिस्तंभ, प्राचीन लिखावट, होमियोपैथीक औषधी, वैज्ञानिक अनुसन्धान, आयकर विभाग, कोयला, सुरंग,न्यास, खाल और त्वचा।

दसवें भाव में उपस्थित ग्रहों के संयोग से कुछ जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। इन ग्रहों का विशिष्ट मेल कुछ विशेष प्रभाव उत्पन्न करता है।

बृहत् जातक के वराहमीहिर के अनुसार सूर्य और बुध का मेल आपको होशियार, निपुण और सुखी रखेगा। इंजीनियरिंग, लेखाकार (मुनीम) का काम और वकालत का काम आपके लिए उचित पेशा है।

बृहत् जातक के वराहमीहिर के अनुसार सूर्य और शुक्र का मेल यह सूचित करता है कि आप आयुधों पर नियंत्रण करेंगी। वस्त्रों को रंग देने की प्रक्रिया से संबंधित उद्योगो में आप काम करेंगी, निर्वाहन विभाग और स्वास्थ्य संरक्षण क्षेत्र में आपके लिए अच्छे अवसर हैं।

बृहत् जातक के वराहमीहिर के अनुसार बुध और शुक्र का मेल यह सूचित करता है कि आप अपनी बोली में बहुत चालाक होंगे। आप एक नेता बनने योग्य

है और राजा की तरह मार्गदर्शक बन सकते है। कला, साहित्य, इंजीनियरिंग और फोटोग्राफी का उद्योग क्षेत्र आपके लिए अच्छा है।

सूर्य, बुध और शुक्र का विशिष्ट मेल आपको कलात्मक, काव्यमय और सहित्यक गुण प्रदान करता है।

### आमदनी

एकादश भाव जिसे लाभ स्थान भी कहते हैं आमदनी और आमदनी के मार्गों के विषय में सूचित करता है। यह स्थान कुंडली का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान समझा जाता है क्योंकि शास्त्रों के अनुसार ग्यारहवें स्थान में स्थित कोई भी ग्रह अशुभ फल नहीं देता।

लाभ स्थान के स्वामी के दसवें स्थान पर रहने से मानसिक विकारों को ठीक तरीके से काबू में रख पायेंगे। आप अभिनन्दन के पात्र बनेंगे और सम्मानित भी होंगे। आप भक्तिमय कार्यों के प्रति सम्मान की दृष्टि रखनेवाले हैं। राजपक्ष से लाभ प्राप्त कर सकेंगे।

ग्यारहवें स्थान का स्वामी केन्द्र में है। आप धन और संम्पत्ति पा सकते हैं।

### खर्च, व्यय, नष्ट

द्वादश भाव व्यय भाव कहलाता है। खर्च और धनहानि के विषय में इसी भाव से जानकारी मिलती है।

बारहवाँ भावाधिपति दसवें स्थान पर रहने से राष्ट्र के निमित्त या राज कारण के निमित्त धन का खर्च होगा। माता-पिता से मिलने वाली वारिसी संपत्ति बड़ी मुश्किल से प्राप्त होगी। पिताजी से विचार भिन्नता रह सकती है।

## दशा / अपहार के फल

भारतीय ज्योतिष शास्त्र के अनुसार मानव जीवन को भिन्न दशाओं में विभाजित किया गया है। ग्रहों के स्थान और स्थिति के अनुसार योग और योगों की शक्ति के अनुसार दशा-फल होता है। सत्ताईस नक्षत्रों को तीन तीन के समूह में बांट कर नौ दशाओं में विभाजित किया गया है। इनके अधिकार के समय को दशा कहते हैं। बच्चों के जो अप्रायोगिक फल होते हैं वे माँ-बाप को बाधक होते हैं। उसी तरह पति-पत्नी के बारे में भी फल का निर्णय करना है। तालिका देखकर दशाओं का आरंभ और अंत समझ लेना है। सप्तवर्गों के आधार पर ग्रहों का बलाबल निश्चित किया गया है।

### शनि दशा

शनि, दु:ख, अंगहीनता, रोग, कष्ट और अन्य मुसीबतों का देवता है। इस दशा में ऊँच-नीच, सुख-दु:ख दोनों का अनुभव होगा। सरकार या उच्च अधिकारियों के माध्यम से धन लाभ हो सकता है। अनेक सेवक और सहायकों से आपको सहायता मिलेगी। अच्छी आमदनी भी हो सकती है। व्यापार के भागीदार या सन्तान से सुख में कमी होने की संभावना है। कुछ कारणों से मन चंचल रहेगा। हाथों और पैरों में कोई पीड़ा होने की संभावना है। श्रेष्ठ नायक का पद सफलता पूर्वक संभाल पायेंगे। जीवन के उत्तरार्ध काल में शनिदशा के कारण, अपनों से बड़ी उम्र की महिला के साथ संपर्क होने की संभावना है। इस तरह का संपर्क यदि लंबे समय तक रहता तो अयोग्य बंधनों में फँसने की भी संभावना है। आप से हीन स्थिति में रहनेवाले व्यक्तियों से रिश्ता जुड़ सकता है। बड़प्पन, प्रतिष्ठा, सुवर्णाभूषण और धनादि की प्राप्ति होगी। धार्मिक स्थान के निर्माण में सहयोग देना संभव होगा।

शनि वर्गबल के कारण सशक्त स्थिति में रहा है। इस कारण अनेक शुभ फलों की प्राप्ति होगी।

शनि अच्छे स्थान में रहने से इस दशा में आपको अपने परिश्रम से पदोन्नति मिलेगी। कृषि और अन्य उत्पादनों से अच्छा लाभ प्राप्त होगा। स्वयं ही कुछ संपत्ति कमाने का भाग्य प्राप्त होगा। भिन्न वर्गीय व्यक्तियों से मान व धन प्राप्त होना संभव होगा।

#### ( 18-05-2024 >> 21-05-2027 )

शनि की दशा में शनि की अन्तर्दशा में आप क्रोधी और झगड़ालू बनेंगे। छोटे छोटे झगड़ों से मन कलुषित होगा। इस प्रकार के व्यवहार के कारण बाद में पछताना होगा। आपको दूर देशों की यात्रा करनी पड़ेगी। आपका निवास स्थान अपने घर से दूर रहेगा। नीच वृत्ति के लोगों का सहवास रखना पड़ेगा।

#### ( 21-05-2027 >> 28-01-2030 )

शनि की दशा में बुध की अन्तर्दशा में आप को अनेक प्रकार के लाभ होंगे। आपकी इच्छाएँ सफल होगी और लक्ष्यप्राप्ति भी होगी। प्रगति की अपेक्षा कर सकते हैं। कर्तव्यबोध जाग उठेगा। प्रोत्साहन और सहायता चारों ओर से आपको प्राप्त होगी। अप्रतिक्षित लोगों से सहायता मिलेगी। निवास स्थान में बदली

होगी। नौकरी में स्थानान्तरण की आशंका है।

### ( 28-01-2030 >> 09-03-2031 )

शनि की दशा में केतु की अन्तर्दशा में आप को दु:ख होते रहेंगे। ध्यान और प्रार्थना से कुछ शाँति प्राप्त हो सकती है। संग्रहित की गई चीज़ें नष्ट होने की संभावना है। आपके मार्ग में असुविधाएँ और रुकावटें आती रहेगी। आपकी व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर अनेक नियंत्रण लगाये जायेंगे। निद्रा में भयभीत करनेवाले स्वप्न सतायेंगे।

### ( 09-03-2031 >> 09-05-2034 )

शनि की दशा में शुक्र के अंतर में आप श्रेष्ठ मित्रों से संबंध स्थापित करेंगे। सहायता की कमी नहीं रहेगी। आपके सहयोगी की सहायता, आपकी प्रगति में प्रमुख स्थान लेगी। घर की मरम्मत एवं नवीनीकरण संभव है। साहित्य में रुचि भी दिखायी देगी। विवाहादि मांगलिक कार्य होंगे।

### ( 09-05-2034 >> 21-04-2035 )

शनि की दशा में सूर्य की अन्तर्दशा में आपके कारण निकट के संबन्धी पीड़ित होंगे। अनेक समस्याओं का सामना करना होगा। स्नेहजनों के प्रति शंका-कुशंका उत्पन्न होगी। यह आपके जीवन तथा संबंधो पर बुरा प्रभाव पड़ेगा। आप अपनी नौकरी में निराश हो जायें तो फल बहुत बुरा होगा। इसलिए सतर्क रहें। कठिन परिश्रम करके किसी न किसी तरह मन का संतुलन बनाये रखना है। मनोबल को स्थिर बनाना आवश्यक है।

### ( 21-04-2035 >> 19-11-2036 )

शनी दशा में चंद्र की अन्तर्दशा के दौरान आपको कुछ समस्याएं हो सकती हैं। समस्याओं का डर हो सकता हैं। यह ऐसा समय हैं जिसमें आपको अपने रिश्तों को लेकर काफी सतर्क रहना होगा, क्योंकी आपके द्वारा भावनाओं को चोट पहुंचाने वाला कोई काम हो सकता हैं। जिस कारण रिश्तों में कड़वाहट पैदा हो सकती हैं। निरर्थक कारणों के लिये बहस करने कि प्रवृत्ती आपमें उत्पन्न हो सकती है और आपको उन पर अंकुश लगाना चाहिये।

### ( 19-11-2036 >> 29-12-2037 )

शनी दशा में मंगल ग्रह की अन्तर्दशा के दौरान, लंबी दूरी की यात्रा के अवसर के संकेत हैं। किसी बिमारी के संयोग भी हैं। अप्रसन्नता के कुछ क्षण हो सकतें हैं लेकिन इस समय अवधी के अंत तक धन और आत्मविश्वा की प्राप्ती के कारण आप आनंदी हो जायेंगे।

### ( 29-12-2037 >> 04-11-2040 )

शनी दशा में राहू की अन्तर्दशा के दौरान, आपको धन से संबंधीत परेशानियां हो सकती हैं। आपको अधिक सतर्क रहना होगा और इसी दृष्टीकोन के साथ आपको हर परिस्थिती का सामना करना होगा। आपको ध्यान और आत्म मूल्यांकन में समय बिताना होगा।

### ( 04-11-2040 >> 18-05-2043 )

शनी दशा में बृहस्पती की अन्तर्दशा के दौरान, आनंद के कुछ क्षण होंगे। आपको अपने व्यक्तिगत जीवन के साथ साथ व्यावसायिक जीवन में मदद करने के लिये आपके आस पास बहुत सारे लोग रहेंगे। अनपेक्षित ऐसे कई स्थानों से आपका अनुमोदन और प्रशंसा की जाएगी। विवाह जैसे शुभ कार्यों में सहभागी होने के साथ साथ आप आयोजन भी करेंगे। आपको अध्ययन में रुची रहेगी।

## बुध दशा

इस दशा में बड़े लोगों की सहायता प्राप्त होगी। ज़मीन, जानवर, चिड़िया और अच्छे साथियों से आनन्द प्रदान होगा। लोगों के सहायक होने से उनका आदर और प्यार आपको प्राप्त होगा। आध्यात्मिकता और दानशीलता आपके गुण बने रहेंगे। इस दशा में स्वास्थ्य संबन्धी बाधा कभी कभी हो सकती है। व्यक्तिगत उन्नति तथा साहित्यिक प्रवृत्तियों के विकास के लिए यह समय उपयुक्त रहेगा। आप जो स्नातक हों तो उपरोक्त कार्य से बड़ा लाभ होगा। नए भवन निर्माण या प्राप्ति होगी। स्त्री-पुत्रादि विषयक फल प्राप्त होंगे।

सप्तवर्गीय गणित में बुध बलवान है। अधिकतर शुभ फल प्राप्त होंगे।

इस दशा में अच्छी शिक्षा या ज्ञान प्राप्त करने का योग होगा। लिखना, पढना, व्याख्यान (भाषण) देना आदि में पूरा समय लग जा सकता हैं। दूसरे लोग आपके अधिकार में रहेंगे। व्यापारिक कार्यों में एक मध्यवर्ती होकर अच्छा लाभ प्राप्त होगा। किसी वस्तु के उत्पादन के एजेंट होकर या किसी प्रकाशन से अच्छी आमदनी मिलने की संभावना है। मित्रों और रिश्तेदारों की सहायता मिलेगी। उत्तर की ओर यात्रा संभव है और खूब धन कमाने का योग है। युवा लोगों के परिचय से भी अच्छा लाभ प्राप्त होगा। लेखन-प्रकाशन का काम भी लाभदायक रहेगा।

### ( 18-05-2043 >> 14-10-2045 )

बुध दशा में बुध की अन्तर्दशा के दौरान तेज बुद्धीमत्ता का आपको अनुभव होगा। आप किसी रचनात्मक परियोजनाओं में जूट सकते हैं। आपको अपने ज्ञान को प्रदर्शित करने का अवसर प्राप्त होगा और आप अधिक जिम्मेदारीयां लेंगे। आप अपने प्रशंसको से घिरे रहेंगे और यह आपको संतुष्ट और खुश रखेगा। आपके परिवार में शुभ कार्य जैसे विवाह हो सकते हैं।

### ( 14-10-2045 >> 11-10-2046 )

बुध दशा में केतु की अन्तर्दशा के दौरान वर्तमान स्थिती को लेकर चिंताऐं उत्पन्न हो सकती हैं। परिवार और अन्य को लेकर आप भावुक हो सकते हैं। इसका मतलब यह नही कि सारा समय प्रतिकुल ही बना रहेगा। लाभकारक स्थितीयां किसी भी समय आ सकती हैं। आपको अपने स्वास्थ्य कि अधिक चिंता करनी चाहिये।

### ( 11-10-2046 >> 11-08-2049 )

बुध दशा में शुक्र की अन्तर्दशा के दौरान आप अपने आप को स्थिर और प्रफुल्लित अनुभव करेंगे। इस समय में आप अपने समाज में एक आदरणीय व्यक्ति के रूप में जाने जायेंगे। शारिरीक और मानसिक स्वास्थ्य अच्छा बना रहेगा। लोकोपकारी कार्यों में आपको आनंद प्राप्त होगा। घर में पुनर्रचना का कुछ काम चल सकता हैं। आपके परिवार में कुछ शुभ कार्य हो सकते हैं।

### ( 11-08-2049 >> 17-06-2050 )

बुध दशा में सूर्य की अन्तर्दशा में आपको अनुभव होगा कि आपकी उपलब्धीयां आपको खुशियां प्रदान कर रही हैं। आपके कुछ रिश्तेदार और मित्र किसी संकट में हो सकते हैं और सहायता हेतू वे आपके पास आ सकते हैं। आप महत्वपूर्ण पारिवारीक और सामाजिक कार्यक्रमों में भाग लेंगे। नई संपत्ती खरीदने और यात्रा के भी संकेत हैं। आप अपने शौक पूरे करने में समय बिताएंगे।

## केतु दशा

### 18-05-2060 से प्रारंभ

इस दशा में मानसिक शान्ति कम होगी। मुसीबतें आती रहेंगी। मन का नियन्त्रण करना आवश्यक है। नहीं तो मानसिक विषमताओं में पड़कर निराश होने की संभावना है। शरीर व मन को दृढ करने के लिए किसी दवा आदि का लेना अच्छा होगा। समय समय पर कई समस्याएँ आपके सामने आयेंगी। अपवाद और शंका का शिकार होने की संभावना भी है। स्वास्थ्य ठीक रखने के लिए डाक्टरों को दिखाना और उनकी सलाह के अनुसार उपचार करवाना अच्छा है। केतु अच्छे स्थान पर रहता है तब धन, पारिवारिक सुख आदि देनेवाला होता है। इस दशा में गरीबी, बुद्धिशून्यता और शारीरिक अस्वस्थता साधारण होगी। बालावस्था में यदि केतु दशा आती हैं तो शिक्षण कार्य में अनेक बाधाएं आती हैं। आपकी आयु यदि जीवन के पूर्वार्ध काल व्यतीत कर चुकी है तो, किसी बंधु से बिछडना या वंचित होना संभव होगा। हर समस्या से बचना कठिन है। मानसिक बोझ और मनोव्यथा अनुभव होने की संभावना है। इस दशा का पूर्व ज्ञान होने पर कुछ कठिनाइयों से बच सकते हैं। भक्तिपूर्ण जीवन से मानसिक शाँति प्राप्त होगी। महिलाओं के निमित्त अन्य लोगों से संबन्ध बिगड़ सकते हैं। मानहानी, धन नाश और दाँत का दर्द सर्वसाधारण होगा। कुछ समय बाद असाधारण संपत्ति सुख और चारों ओर आनन्दपूर्ण वातावरण की प्रतीक्षा कर सकते हैं।

केतु वर्गबल से सशक्त हो रहा है। इस दशा में आप शुभ फलों की आशा कर सकते हैं।

इस दशा में आप पहले से अधिक दार्शनिक और ईश्वरोपासक बनने की संभावना रखते हैं। औषधियों से आपको अच्छी कमाई हो सकती है। आपको पारिवारिक सुख और सुविधा मिलेगी। आडंबरयुक्त जीवन प्रिय लगेगा। धार्मिक कार्यों में बडा ध्यान होगा। इस दशा में तन्दुरस्त रहना संभव है। सुख और शान्ति से दिन बीतेंगे।

# ग्रह दोष और उपाय

## मांगलिक दोष

जन्मपत्रिका में मंगल के प्रभाव को बहुत अधिक महत्व प्राप्त है। मंगल या कुज का विवाह संबन्धी विषयों तथा गुणमेंलन आदि के विश्लेषण में बहुत महत्व है। सामन्य तया जब मंगल जन्मकुंडली के सातवें या आठवें या द्वादश भाव में हो तो मंगल दोष माना जाता है। शास्त्रोक्त ग्रन्थों में मंगल के प्रभाव को बताते हुए अनेक नियमों का संग्रह दिया गया है। उन नियमों के आधार से यह पता चलता है कि सातवें या आठवें स्थान पर रहते हुए मंगल, दोष ग्रस्त होकर भी उसका दुष्प्रभाव कुछ कारनों से क्षीण हो जाता है। कुज दोष या मंगलदोष को समझने के लिये यहाँ विस्त्रित रूप से विश्लेषण किया गया है। निम्न लिखित बातों से पता चलता है कि आपकी जन्मपत्रिका में मंगल किस प्रकार शुभ-अशुभ फल उत्पन्न करता है।

इस जन्मपत्रिका में मंगल, जन्म कुंडली में तिसरा स्थान पर है।

लग्न स्थान के हिसाब से यह जन्मकुंडली कुज दोष या मंगलदोष से मुक्त है।

जन्मकुंडली में लग्न स्थान की स्थिति के अनुसार मंगलदोष का विश्लेशण किया गया है।

यह जन्मकुंडली मंगल दोष से मुक्त है।

### उपचार

यदि आपकी कुंडली में कुज दोष नहीं हैं आपको किसी तरह के कोई उपायों को करने की जरूरत नहीं हैं।

## राहु दोष और केतु दोष

राहु और केतु अस्पष्ट ग्रह है। उनकी गति परस्पर संबंधित है और एक ही अंग के भाग होने के कारण दोनों हर समय वह एक दुसरों कें विरुद्ध होते है, किन्तु दृष्टि सें विचार करते हुए, वह एक दुसरों सें संबंधित है।

सामान्य रूप सें, राहु सकारात्मक है और गुरू के प्रती लाभदायी है और इसलिए वह विकास और स्व-मदद कें लिए कार्य करता है और केतु बंधन और शनी के विघ्न को दर्शाता है और इसलिए विकास में बाधा लाता है। इस प्रकार, राहु सकारात्मक उद्देश्य दर्शाता है और केतु विकास की सहज संधि दर्शाता है।

इसलिए, राहु भौतीकवाद और इच्छा सूचित करता है, तथा केतु आध्यात्मिक प्रवृत्ति और भौतीकवाद की सूक्ष्म प्रक्रिया दर्शाता है। राहु को कपट, धोखा और बेईमानी के लिए माना जाता है।

### राहु दोष

आपकी जन्मकुंडली में राहु दोष नही है।

### राहु दोष के उपाय

आपकी जन्मकुंडली में राहु दोष न होने से, आपको कोई उपाय करने की जरूरत नही हैं।

### केतु दोष

इस जन्मकुंडली मे केतु दोष नही है।

### केतु दोष हेतु उपाय

आपकी जन्मकुंडली में केतु दोष न होने से, आपने यह उपाय करने की जरूरत नही हैं।

# गोचर फल

| | |
|---|---|
| नाम | : Pawan Kalyan (पुरुष) |
| जन्म राशी | : मकर |
| जन्म नक्षत्र | : उत्तराषाढा |
| ग्रहस्थिती | : 20-सितम्बर-2025 |
| अयनांश | : चैत्रपक्ष |

## सूर्य का गोचर फल।

सूर्य एक राशि में एक महीने तक एक भाव का स्थान ग्रहण करता है।

### (16-सितम्बर-2025 >> 16- अक्तूबर-2025)

इस समय सूर्य नवम भाव से संचार करेगा।

बड़प्पन का अनुभव होगा। स्वाभाव में क्रोध और निराशा प्रकट होगी। योग्य और अयोग्य का निर्णय करने में भूल होगी। अभिमान और गौरव को नष्ट करने वाले नीच कार्य का ओर ध्यान आकर्षित होगा। आत्मसंयम से ही इससे बचा जा सकता है।

### (16-अक्तूबर-2025 >> 15- नवम्बर-2025)

इस समय सूर्य दशम भाव से संचार करेगा।

अच्छी परिस्थिति पुनः प्राप्त होगी। सभी क्षेत्रों में सामान्य लाभ होता रहेगा। परिवार के अन्य व्यक्तियों को अनेक लाभ होंगे। कुछ ही सप्ताहों के अन्दर आपको प्रधान व्यक्तियों के बीच में स्थान प्राप्त होगा। अनेक व्यक्तियों से आपको प्रोत्साहन मिलता रहेगा।

### (15-नवम्बर-2025 >> 15- दिसम्बर-2025)

इस समय सूर्य ग्यारहवां भाव से संचार करेगा।

वर्तमानकाल आप के लिए श्रेष्ठ रहेगा। हर कार्य सुरक्षा के साथ आगे बढ़ाया जायेगा। व्यापारिक यात्राओं से धन का लाभ होता रहेगा। व्यापार में लाभ होगा। लाटरी जीतने की भी संभावना है। जुआ जैसे खेलों में रुचि बढ़ेगी। आपकी तन्दुरुस्ती अच्छी रहेगी। रुके हुए काम बना लेने का प्रयत्न होना चाहिए।

## गुरु का गोचर फल।

बृहस्पति एक राशि में करीब एक साल तक रहता है। यह एक प्रधान ग्रह है और बहुत से फल इसके आधार पर बताये जाते हैं।

### (14-मई-2025 >> 18- अक्तूबर-2025)

इस समय गुरु छट्ठा भाव से संचार करेगा।

आपको सभी सुख सुविधाएँ प्राप्त होगी फिर भी मन अस्वास्थ्य रहेगा। बृहस्पति की प्रतिकूलता और कुछ समय तक रहेगी, पर उसकी अनुकूलता आपको जल्दी प्राप्त होनेवाली है। अकारण मन उद्वेग से भरा रहेगा। सत्कारों और मनोरंजन में आपको स्थान प्राप्त होगा। आप भोजन समारंभ में आमन्त्रित किए जायेंगे। आपको विशेष मुख्य अतिथि का स्थान भी प्राप्त होगा।

### (18-अक्तूबर-2025 >> 5- दिसम्बर-2025)

इस समय गुरु सातवाँ भाव से संचार करेगा।

बृहस्पति आपको सुखमय और ऐश्वर्यमय जीवन देता रहेगा। आपके मन को उल्हास और शक्ति का अनुभव होगा। आपके व्यक्तित्व का मूल्यांकन किया जायेगा। समाज में आपका प्रधान स्थान रहेगा। स्थिति में उन्नति और पदोन्नति प्राप्त होगी। व्यावसायिक सफलता प्राप्त होगी।

## शनि का गोचर फल।

शनि सामान्यत: दु:ख देनेवाला ग्रह है और उसका प्रभाव दु:ख उत्पन्न करता रहता है। पर कुछ स्थानों में वह खूब लाभदायक फल भी देता है। शनि एक राशि से दूसरी राशि में ढाई वर्ष में पहुँचता है।

(30-मार्च-2025 >> 3-जून-2027)

इस समय शनि तिसरा भाव से संचार करेगा।

शनि आपके लिए इस समय अनुकूल है। अच्छे कार्य होंगे और सभी दिशाओं से सुखद समाचार प्राप्त होंगे। आपकी कार्यशक्ति और योग्यताएँ बढ़ेगी। सन्मान प्राप्त होगा। स्वास्थ्य में सुधार होगा। अविचारित रूप में आप को धन का लाभ होगा। संपन्नता की कभी कमी नहीं होगी। भौतिक सुविधाएँ भी प्राप्त होगी। तन्दुरुस्ती बढ़ती रहेगी। आपको अपने लक्ष्य की प्राप्ति होने वाली है। विजयश्री आपके पक्ष में रहेगी।

(4-जून-2027 >> 20-अक्तूबर-2027)

इस समय शनि चौथा भाव से संचार करेगा।

शारीरिक अस्वास्थ्य और मानसिक विषमताएँ आती रहेगी। आप डर और शंका से उद्विग्न बनते जायेंगे। हमेशा आत्मविश्वासी एंव शुभचिन्तक रहने की कोशिश कीजिए। इस समय आपको कई दूर की यात्राएँ करनी पड़ेगी और घर से दूर रहना पड़ेगा। कंटक शनि के इस काल में अपने दोस्तों और स्वजनों से संबन्ध बिगड़ न जाये उसका ध्यान रखें।

# अनुकूल समय

## उद्योग या व्यवसाय के लिए अनुकूल समय

लग्न अधिपति, दशमेश, दशम भाव और लग्न में उपस्थित शुभ ग्रह, लग्न और दशम भाव में बृहस्पति का दृष्टि और अन्य विषयों को ध्यान में रखकर दशाकाल / अपहार आदि के अध्ययन के बाद उचित और श्रेष्ट समय ज्ञात किया जाता है।

### 15 उम्र से लेकर 60 उम्र तक का विश्लेषण।

| दशा | अपहार | काल प्रारंभ | काल के अन्त समय | विश्लेषण |
|---|---|---|---|---|
| मंगल | शनी | 08-10-1985 | 17-11-1986 | अनुकूल |
| मंगल | बुध | 17-11-1986 | 14-11-1987 | अनुकूल |
| मंगल | केतु | 14-11-1987 | 11-04-1988 | अनुकूल |
| मंगल | शुक्र | 11-04-1988 | 11-06-1989 | श्रेष्ट |
| मंगल | सूर्य | 11-06-1989 | 17-10-1989 | श्रेष्ट |
| मंगल | चंद्र | 17-10-1989 | 18-05-1990 | अनुकूल |
| राहु | गुरू | 28-01-1993 | 24-06-1995 | अनुकूल |
| राहु | शुक्र | 05-12-2001 | 04-12-2004 | अनुकूल |
| राहु | सूर्य | 04-12-2004 | 29-10-2005 | अनुकूल |
| राहु | मंगल | 30-04-2007 | 18-05-2008 | अनुकूल |
| गुरू | शनी | 06-07-2010 | 16-01-2013 | अनुकूल |
| गुरू | बुध | 16-01-2013 | 24-04-2015 | अनुकूल |
| गुरू | केतु | 24-04-2015 | 30-03-2016 | अनुकूल |
| गुरू | शुक्र | 30-03-2016 | 29-11-2018 | श्रेष्ट |
| गुरू | सूर्य | 29-11-2018 | 17-09-2019 | श्रेष्ट |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| गुरू | चंद्र | 17-09-2019 | 16-01-2021 | अनुकूल |
| गुरू | मंगल | 16-01-2021 | 23-12-2021 | श्रेष्ट |
| गुरू | राहु | 23-12-2021 | 18-05-2024 | अनुकूल |
| शनी | शुक्र | 09-03-2031 | 09-05-2034 | अनुकूल |

गुरू के विविध घरों में विशेष रूप से चतुर्थ भाव से संचार और दृष्टी का अध्ययन कर निम्न समय आपके करीयर के लिए योग्य पाये गये हैं।

| काल प्रारंभ | काल के अन्त समय | विश्लेषण |
|---|---|---|
| 24-01-1986 | 02-02-1987 | अनुकूल |
| 19-06-1988 | 01-07-1989 | अनुकूल |
| 20-07-1990 | 14-08-1991 | श्रेष्ट |
| 11-09-1992 | 12-10-1993 | अनुकूल |
| 10-11-1994 | 06-12-1995 | अनुकूल |
| 08-01-1998 | 25-05-1998 | अनुकूल |
| 09-09-1998 | 12-01-1999 | अनुकूल |
| 03-06-2000 | 16-06-2001 | अनुकूल |
| 06-07-2002 | 30-07-2003 | श्रेष्ट |
| 29-08-2004 | 28-09-2005 | अनुकूल |
| 29-10-2006 | 22-11-2007 | अनुकूल |
| 02-05-2009 | 30-07-2009 | अनुकूल |
| 21-12-2009 | 02-05-2010 | अनुकूल |
| 02-11-2010 | 06-12-2010 | अनुकूल |
| 18-05-2012 | 31-05-2013 | अनुकूल |
| 20-06-2014 | 14-07-2015 | श्रेष्ट |
| 12-08-2016 | 12-09-2017 | अनुकूल |
| 12-10-2018 | 29-03-2019 | अनुकूल |
| 24-04-2019 | 05-11-2019 | अनुकूल |
| 07-04-2021 | 14-09-2021 | अनुकूल |
| 22-11-2021 | 13-04-2022 | अनुकूल |
| 02-05-2024 | 14-05-2025 | अनुकूल |
| 18-10-2025 | 05-12-2025 | श्रेष्ट |
| 02-06-2026 | 31-10-2026 | श्रेष्ट |

| | | |
|---|---|---|
| 26-01-2027 | 26-06-2027 | श्रेष्ट |
| 27-11-2027 | 28-02-2028 | अनुकूल |
| 25-07-2028 | 26-12-2028 | अनुकूल |
| 30-03-2029 | 25-08-2029 | अनुकूल |
| 26-01-2030 | 01-05-2030 | अनुकूल |
| 24-09-2030 | 17-02-2031 | अनुकूल |

## व्यापार के लिए अनुकूल समय

द्वितीयेश, नवमेश, दशमेश, एकादशेश पर गुरु की दृष्टी बृहस्पति, लग्न और ग्यारहवें भाव पर बृहस्पति का दृष्टि, और अन्य विषयों को ध्यान में रखकर व्यापार के लिए अनुकूल और श्रेष्ट समय को ज्ञात किया जाता है।.

### 15 उम्र से लेकर 60 उम्र तक का विश्लेषण।

| दशा | अपहार | काल प्रारंभ | काल के अन्त समय | विश्लेषण |
|---|---|---|---|---|
| मंगल | शनी | 08-10-1985 | 17-11-1986 | अनुकूल |
| मंगल | बुध | 17-11-1986 | 14-11-1987 | श्रेष्ट |
| मंगल | केतु | 14-11-1987 | 11-04-1988 | अनुकूल |
| मंगल | शुक्र | 11-04-1988 | 11-06-1989 | अनुकूल |
| मंगल | सूर्य | 11-06-1989 | 17-10-1989 | श्रेष्ट |
| मंगल | चंद्र | 17-10-1989 | 18-05-1990 | श्रेष्ट |
| राहु | गुरू | 28-01-1993 | 24-06-1995 | अनुकूल |
| राहु | बुध | 30-04-1998 | 16-11-2000 | अनुकूल |
| राहु | सूर्य | 04-12-2004 | 29-10-2005 | अनुकूल |
| राहु | चंद्र | 29-10-2005 | 30-04-2007 | अनुकूल |
| राहु | मंगल | 30-04-2007 | 18-05-2008 | अनुकूल |
| गुरू | शनी | 06-07-2010 | 16-01-2013 | अनुकूल |
| गुरू | बुध | 16-01-2013 | 24-04-2015 | श्रेष्ट |
| गुरू | केतु | 24-04-2015 | 30-03-2016 | अनुकूल |
| गुरू | शुक्र | 30-03-2016 | 29-11-2018 | अनुकूल |
| गुरू | सूर्य | 29-11-2018 | 17-09-2019 | श्रेष्ट |
| गुरू | चंद्र | 17-09-2019 | 16-01-2021 | श्रेष्ट |
| गुरू | मंगल | 16-01-2021 | 23-12-2021 | श्रेष्ट |
| गुरू | राहु | 23-12-2021 | 18-05-2024 | अनुकूल |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| शनी | बुध | 21-05-2027 | 28-01-2030 | अनुकूल |

गुरू कें विविध घरों में विशेष रूप से एकादश और द्वितीय भावों से संचार और दृष्टी का अध्ययन कर निम्न समय आपके व्यवसाय के लिए योग्य पाये गये हैं।

| काल प्रारंभ | काल के अन्त समय | विश्लेषण |
|---|---|---|
| 24-01-1986 | 02-02-1987 | अनुकूल |
| 19-06-1988 | 01-07-1989 | अनुकूल |
| 20-07-1990 | 14-08-1991 | श्रेष्ट |
| 11-09-1992 | 12-10-1993 | अनुकूल |
| 10-11-1994 | 06-12-1995 | अनुकूल |
| 08-01-1998 | 25-05-1998 | अनुकूल |
| 09-09-1998 | 12-01-1999 | अनुकूल |
| 03-06-2000 | 16-06-2001 | अनुकूल |
| 06-07-2002 | 30-07-2003 | श्रेष्ट |
| 29-08-2004 | 28-09-2005 | अनुकूल |
| 29-10-2006 | 22-11-2007 | अनुकूल |
| 02-05-2009 | 30-07-2009 | अनुकूल |
| 21-12-2009 | 02-05-2010 | अनुकूल |
| 02-11-2010 | 06-12-2010 | अनुकूल |
| 18-05-2012 | 31-05-2013 | अनुकूल |
| 20-06-2014 | 14-07-2015 | श्रेष्ट |
| 12-08-2016 | 12-09-2017 | अनुकूल |
| 12-10-2018 | 29-03-2019 | अनुकूल |
| 24-04-2019 | 05-11-2019 | अनुकूल |
| 07-04-2021 | 14-09-2021 | अनुकूल |
| 22-11-2021 | 13-04-2022 | अनुकूल |
| 02-05-2024 | 14-05-2025 | अनुकूल |
| 18-10-2025 | 05-12-2025 | श्रेष्ट |
| 02-06-2026 | 31-10-2026 | श्रेष्ट |

## ग्रह निर्माण के लिए अनुकूल समय

चौथे भाव के अधिपति, चौथे भाव पर शुभाशुभ ग्रहों की दृष्टी, चौथे भाव के स्वामी की गोचर स्थिति, इत्यादि विषयों को ध्यान में रख कर दशा अंतरदशा

और अन्य बातों का विस्तृत अध्ययन करने के उपरान्त गृह निर्माण, निर्माणारंभ, द्वार की दिशा, मुख और चौखट आदि के मुहूर्त और समय ज्ञात किये जाते हैं, और निर्माण के लिए अनुकूल समय ज्ञात किया जाता हैं।

## 15 उम्र से लेकर 80 उम्र तक का विश्लेषण।

| दशा | अपहार | काल प्रारंभ | काल के अन्त समय | विश्लेषण |
|---|---|---|---|---|
| मंगल | शनी | 08-10-1985 | 17-11-1986 | अनुकूल |
| मंगल | शुक्र | 11-04-1988 | 11-06-1989 | अनुकूल |
| राहु | गुरू | 28-01-1993 | 24-06-1995 | अनुकूल |
| राहु | शनी | 24-06-1995 | 30-04-1998 | अनुकूल |
| राहु | शुक्र | 05-12-2001 | 04-12-2004 | अनुकूल |
| गुरू | शनी | 06-07-2010 | 16-01-2013 | श्रेष्ट |
| गुरू | बुध | 16-01-2013 | 24-04-2015 | अनुकूल |
| गुरू | केतु | 24-04-2015 | 30-03-2016 | अनुकूल |
| गुरू | शुक्र | 30-03-2016 | 29-11-2018 | श्रेष्ट |
| गुरू | सूर्य | 29-11-2018 | 17-09-2019 | अनुकूल |
| गुरू | चंद्र | 17-09-2019 | 16-01-2021 | अनुकूल |
| गुरू | मंगल | 16-01-2021 | 23-12-2021 | अनुकूल |
| गुरू | राहु | 23-12-2021 | 18-05-2024 | अनुकूल |
| शनी | बुध | 21-05-2027 | 28-01-2030 | अनुकूल |
| शनी | केतु | 28-01-2030 | 09-03-2031 | अनुकूल |
| शनी | शुक्र | 09-03-2031 | 09-05-2034 | श्रेष्ट |
| शनी | सूर्य | 09-05-2034 | 21-04-2035 | अनुकूल |
| शनी | चंद्र | 21-04-2035 | 19-11-2036 | अनुकूल |
| शनी | मंगल | 19-11-2036 | 29-12-2037 | अनुकूल |
| शनी | राहु | 29-12-2037 | 04-11-2040 | अनुकूल |
| शनी | गुरू | 04-11-2040 | 18-05-2043 | श्रेष्ट |
| बुध | शुक्र | 11-10-2046 | 11-08-2049 | अनुकूल |

गुरू के विविध घरों में विशेष रूप से चतुर्थ भाव से संचार और दृष्टी का अध्ययन कर निम्न समय आपके ग्रह निर्माण के लिए योग्य पाये गये हैं।

| काल प्रारंभ | काल के अन्त समय | विश्लेषण |
|---|---|---|
| 24-01-1986 | 02-02-1987 | अनुकूल |
| 19-06-1988 | 01-07-1989 | अनुकूल |

| | | |
|---|---|---|
| 20-07-1990 | 14-08-1991 | श्रेष्ठ |
| 11-09-1992 | 12-10-1993 | अनुकूल |
| 10-11-1994 | 06-12-1995 | अनुकूल |
| 08-01-1998 | 25-05-1998 | अनुकूल |
| 09-09-1998 | 12-01-1999 | अनुकूल |
| 03-06-2000 | 16-06-2001 | अनुकूल |
| 06-07-2002 | 30-07-2003 | श्रेष्ठ |
| 29-08-2004 | 28-09-2005 | अनुकूल |
| 29-10-2006 | 22-11-2007 | अनुकूल |
| 02-05-2009 | 30-07-2009 | अनुकूल |
| 21-12-2009 | 02-05-2010 | अनुकूल |
| 02-11-2010 | 06-12-2010 | अनुकूल |
| 18-05-2012 | 31-05-2013 | अनुकूल |
| 20-06-2014 | 14-07-2015 | श्रेष्ठ |
| 12-08-2016 | 12-09-2017 | अनुकूल |
| 12-10-2018 | 29-03-2019 | अनुकूल |
| 24-04-2019 | 05-11-2019 | अनुकूल |
| 07-04-2021 | 14-09-2021 | अनुकूल |
| 22-11-2021 | 13-04-2022 | अनुकूल |
| 02-05-2024 | 14-05-2025 | अनुकूल |
| 18-10-2025 | 05-12-2025 | श्रेष्ठ |
| 02-06-2026 | 31-10-2026 | श्रेष्ठ |
| 26-01-2027 | 26-06-2027 | श्रेष्ठ |
| 27-11-2027 | 28-02-2028 | अनुकूल |
| 25-07-2028 | 26-12-2028 | अनुकूल |
| 30-03-2029 | 25-08-2029 | अनुकूल |
| 26-01-2030 | 01-05-2030 | अनुकूल |
| 24-09-2030 | 17-02-2031 | अनुकूल |
| 15-06-2031 | 15-10-2031 | अनुकूल |
| 19-03-2033 | 28-03-2034 | अनुकूल |

| | | |
|---|---|---|
| 16-04-2036 | 10-09-2036 | अनुकूल |
| 18-11-2036 | 26-04-2037 | अनुकूल |
| 17-09-2037 | 17-01-2038 | श्रेष्ट |
| 12-05-2038 | 07-10-2038 | श्रेष्ट |
| 04-03-2039 | 02-06-2039 | श्रेष्ट |
| 05-11-2039 | 06-04-2040 | अनुकूल |
| 30-06-2040 | 03-12-2040 | अनुकूल |
| 07-05-2041 | 31-07-2041 | अनुकूल |
| 03-01-2042 | 10-06-2042 | अनुकूल |
| 29-08-2042 | 27-01-2043 | अनुकूल |
| 31-07-2043 | 11-09-2043 | अनुकूल |
| 03-03-2045 | 13-03-2046 | अनुकूल |

**With best wishes : ASTRO PDF**

VIJAYAWADA

LifeSign 14.0.0 Build 62 IAS_627913283554285346

*__Note:__ This report is based on the data provided by you and the best possible research support we have received so far. We do not assume any responsibility for the accuracy or the effect of any decision that may be taken on the basis of this report. All the longitude values are mentioned in Degree: Minute: Second format and time in Hour: Minute format.